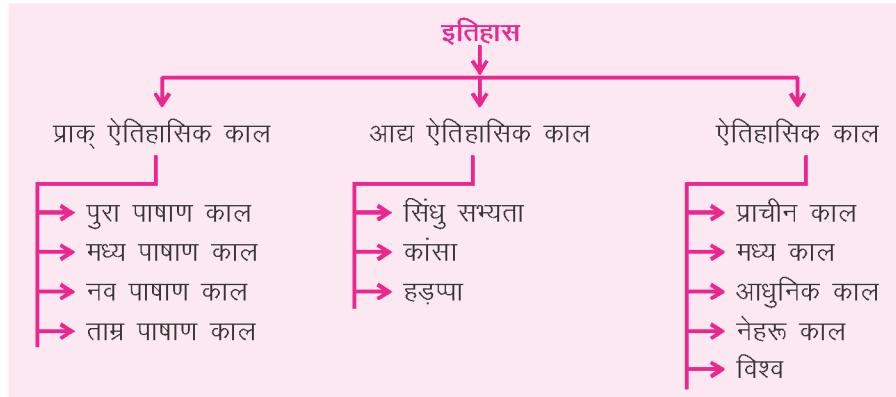


# इतिहास

- ❖ अतीत का अध्ययन इतिहास कहलाता है।
- ❖ इतिहास के जनक हेरोडोटस को कहते हैं।  
इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं—



## ( 1 ) प्राक् ऐतिहासिक काल

इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्त्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

### पाषाण काल

वह समय जब मानव पथर के औजार एवं हथियार का उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।

पाषाण काल को 4 भागों में बाँटा गया है—

- (1) **पुरा पाषाण काल**—यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धि आग की खोज थी।
- (2) **मध्य पाषाण**—यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्योष्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
- (3) **नव या उत्तर पाषाण काल**—इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही मानव कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में पहिया तथा मनका (घड़ा) की खोज की।

### Note :

- (1) मानव ने खेती 7000 ईसा पूर्व पाकिस्तान के सुलेमान एवं किर्थर पहाड़ियों के बीच की थी। पहली कृषि जौ एवं गेहूँ की थी।

(2) मानव द्वारा पाला गया पहला पशु कुत्ता था।

(4) **ताम्रपाषाण काल**—यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय तांबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकीकरण शुरू हो गया। इसी औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।

**Q.1. किस काल में मानव आखेटक (शिकारी) था?**

पुरा-पाषाण काल में

**Q.2. किस स्थान से पहली बार चावल का साक्ष्य मिला?**  
इलाहाबाद का कोलिड्हवा में।

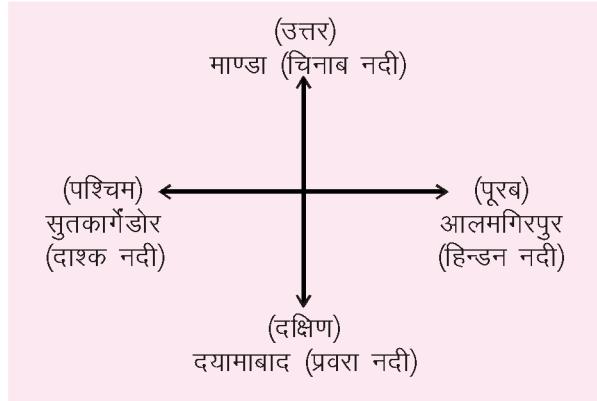
## ( 2 ) आद्य-ऐतिहासिक काल

- ❖ इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी का स्रोत भी पुरातात्त्विक साक्ष्य ही है।
- ❖ इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

### सिंधु सभ्यता

- ❖ यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इस लिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं। इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड्पा से हुई थी। अतः इसे हड्पा सभ्यता भी कहते हैं।
- ❖ सिंधु सभ्यता की जानकारी (Message) चार्ल्स मैशन ने दिया था। सिंधु सभ्यता सर्वेक्षण जेम्स कनिंघम ने किया। सिंधु सभ्यता 13 लाख वर्ग किमी. में फैली है।
- ❖ सिंधु सभ्यता का नामकरण जॉन मार्शल ने किया था।
- ❖ सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई दयाराम साहनी ने की थी।
- ❖ सिंधु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार है।

- ❖ सिंधु सभ्यता विश्व की सबसे पहली शहरी सभ्यता थी।
- ❖ इसका विकास 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व तक हुआ।



Trick-

स्थल – सम = AD

नदी – डच = है पर

- (1) इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुतकार्गेंडोर में थी, जो दाशक नदी के तट पर थी।
- (2) इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाब नदी के तट पर थी।
- (3) इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिन्दन नदी के किनारे थी।
- (4) इसकी दक्षिणी सीमा महाराष्ट्र के दयामाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी।

#### “सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल”

- (1) **हड्पा (1921)**: इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के “माऊन्ट गोमरी” जिला में स्थित है। यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–
- (i) कुम्हार का चाक (ii) अन्नागार (iii) श्रमिक आवास (iv) मातृदेवी की मूर्ति (v) लकड़ी की ओखली (vi) लकड़ का ताबूत (vii) R. H. 37 कविस्तान (viii) हाथी का कपाल (ix) स्वास्तिक चिन्ह।

#### “मोहनजोदङ्गे 1921”

- ❖ इसकी खुदाई सन् 1921 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
- ❖ यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
- ❖ यहाँ मृतकों का एक बहुत बड़ा टिला मिला है। यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–
- (i) पुरोहित आवास (ii) घर में कुँआ (iii) विशाल स्नानागार (iv) अन्नागार (v) सूती वस्त्र (vi) सबसे चौड़ी सड़क (vii) सभागार (viii) पशुपति शिव (ix) काँसे की नर्तकी (x) ताँबे का ढेर।

**Note :** मोहनजोदङ्गे का अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।

#### “चंदहुदङ्गे 1931”

- ❖ इसकी खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की। यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- ❖ यही एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- ❖ यह एक औद्योगिक शहर है। यहाँ निम्नलिखित वस्तुएँ मिलीं–
- (i) मेक–अप सामग्रियाँ (ii) लिपिटक (iii) शीशा (iv) मनका (v) गुड़िया (vi) सुई (vii) अलंकृत ईट (viii) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता।

#### “रोपड़” 1953

- ❖ इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की। यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- ❖ यहाँ मानव के साथ–साथ उसके पालतू जानवरों का भी शव मिला है।

**Note :** ऐसा ही शव नव–पाषाण काल में जम्मु–कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

#### “बनवाली”

- ❖ इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह ने की। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल–निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण घरों में सोखता मिला है।
- ❖ यहाँ की सड़कें टेढ़ी–मेढ़ी थीं।

#### “कालीबंगा”

- ❖ इसका अर्थ होता है काली मिट्टी की चूड़ी।
- ❖ यहाँ से अलंकृत ईट, चुड़ी, जोता हुआ खेत हल एवं हवन कुँड मिले हैं। यह राजस्थान में सरस्वती (घग्घर) नदी के किनारे है।

इसकी खुदाई B.K. थापड़ तथा B.B. लाल ने की।

#### “धौलावीरा”

- ❖ यह गुजरात में स्थित है। यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।

इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह ने की।

#### “सुरकोटदा”

- ❖ यह गुजरात में स्थित है। यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़े की हड्डी मिली है।

#### “लोथल”

- ❖ यहाँ सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- ❖ यहाँ से गोदीवाड़ा मिला है।
- ❖ यहाँ घर के दरवाजे सड़कों की ओर खुलते थे।
- ❖ यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार का संकेत है।

- ❖ यहाँ से युगल शब्दाधान मिला है, जो सतीप्रथा का प्रतीक है।
- “रंगपुर”
- ❖ यह गुजरात में स्थित है।
- ❖ यहाँ से धान की भूसी मिली है।
- ❖ सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल धौलावीरा है (गुजरात + पाकिस्तान)
- ❖ भारत में सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी (हरियाणा) है।
- ❖ सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर मोहनजोदह़ो।
- “सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ”—
- ❖ सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- ❖ यहाँ की सड़कें एक—दूसरे को समकोण पर काटती थीं, तथा ये पूरब—पश्चिम दिशा में थीं, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वतः साफ हो जाती थी।
- ❖ नालियाँ ढकी हुई थीं।
- ❖ अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ❖ इनका व्यापार विदेशों तक होता था।
- ❖ इनका समाज मातृ सतात्मक था।
- ❖ इनकी लिपी भाव चित्रात्मक थी, जिसे पढ़ा नहीं जा सका है।
- ❖ इनके मुहरों पर सर्वाधिक 1 सिंग वाले जानवर का चित्र था।
- ❖ इनके मुहरों पर गाय का चित्र नहीं मिला है।
- ❖ यहाँ माप—तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था।
- ❖ सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- ❖ सिंधु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।

### “मेसोपोटामिया की सभ्यता” ( 10,000 ई.पू. )

- ❖ इसका विकास इराक में टिगरीस एवं यूफ्रेट्स नदी (दजला—फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।
- ❖ यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ❖ इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।
- ❖ मेसोपोटामिया की सभ्यता के 4 भाग थे—
  - (i) सोमेरियन की सभ्यता।
  - (ii) बेबीलोन की सभ्यता।
  - (iii) असिरिया की सभ्यता।
  - (iv) कैलिङ्या की सभ्यता।
- ❖ झूलता हुआ बगीचा बेबीलोन में स्थित है।
- ❖ सिंकंदर ने इस सभ्यता का विनाश कर दिया और इसके स्थान पर ग्रीक सभ्यता को थोप दिया।
- ❖ विश्व की सबसे पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी। जबकि विश्व की पहली नगरीय सभ्यता सिंधु सभ्यता थी।

### मिस्र की सभ्यता ( 3100 ई.पू. )

- ❖ यह मिस्र के रेगिस्तानों में स्थित थी।
- ❖ इस नील नदी की देन कहते हैं।
- ❖ इस सभ्यता का विकास फिरैन के नेतृत्व में किया गया था।
- ❖ इस सभ्यता में पिरामिड, सूर्य कैलेण्डर तथा ममी का विकास हुआ था। अर्थात् इस सभ्यता का रसायन शास्त्र सुदृढ़ था।
- ❖ गिजा का पिरामीड सबसे प्रसिद्ध है।

### “रोम की सभ्यता” ( 600 ई.पू. )

- ❖ यह इटली में विकसित थी।
- ❖ इन्होंने पूरे भू—मध्यसागर पर अधिकार कर लिया था।
- ❖ प्राचीन सभ्यता में यह सबसे विकसित सभ्यता थी। आज भी इस सभ्यता के अवशेष सुरक्षित बचे हुए हैं। जो पर्यटन का आकर्षण केन्द्र हैं।
- ❖ इस सभ्यता के दो सबसे बड़े राजा जुलीयस सीजर एवं आगस्टस थे।

**Note:** जूलियस सीजर की हत्या धोखे से उसके मंत्रीमण्डल द्वारा कर दी गई।

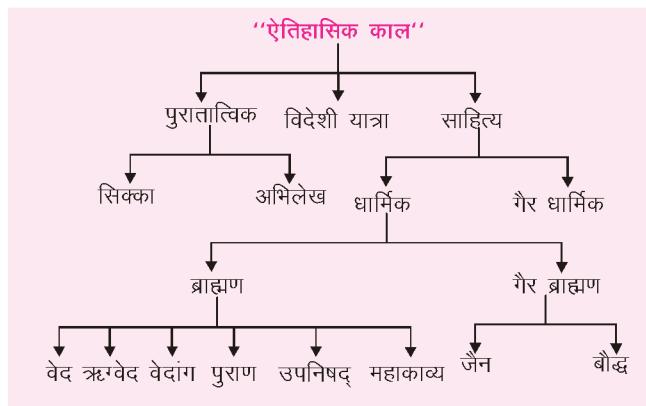
- ❖ जूलियस सीजर नामक नाटक Willian Shakespear ने लिखा है।

### “फारस की सभ्यता” ( 500 ई.पू. )

- ❖ यह वर्तमान ईरान में थी। इस सभ्यता का विकास तेजी से हुआ था। इन्होंने पूरे अरब प्रायद्वीप पर अधिकार कर लिया था।
- ❖ इनकी भाषा फारसी थी तथा पारसी धर्म को मानते थे।
- ❖ सिंकंदर ने इस धर्म का अंत कर दिया।
- “स्पाटा”
- ❖ स्पाटा अपने बहादूर सैनिकों के लिए विख्यात है। यह ग्रीस के पास का एक छोटा सा क्षेत्र था।
- ❖ स्पाटा के मात्र 300 सैनिकों ने लियोनाइड्स के नेतृत्व में ग्रीस के 20000 सैनिकों को मात दे दी थी।
- ❖ ग्रीस की विशाल सैना का नेतृत्व जर्कसीज कर रहा था।
- ❖ जर्कसीज ने धोखे से Spartans को हरा दिया।
- ❖ **पीली नदी की सभ्यता**—यह चीन में 5000 ई.पू. विकसित थी। हांगहो नदी के तट पर इसका विस्तार था। यह सभ्यता अपने उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध थी।

### ( 3 ) ऐतिहासिक काल

- ❖ इसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध हैं, और इसे पढ़ा भी जा सका है। इसके अंतर्गत वैदिक काल से लेकर अभी तक का समय आता है।



### सिक्का (Coins) :

सिक्के का अध्ययन न्यूमेसमेटिक्स कहलाता है।

- (1) टेराकोटा का सिक्का मिट्टी का बना था। यह सिंधु सभ्यता में बना था।
- (2) मौर्य काल के समय आहत या पंचमार्क सिक्के का प्रयोग हुआ। आहत सिक्कों पर लिखावट नहीं होती थी। केवल चित्र बने होते थे। यह पहला धातु का सिक्का था।
- (3) पर्ण चाँदी के सिक्के थे, जो मौर्य काल में प्रचलित थे।
- (4) सीसा का सिक्का सातवाहन काल में प्रचलित थे।
- (5) पहली बार सोने का सिक्का यूनानी शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
- (6) शुद्ध सोने का सिक्का कुषाण शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
- (7) सर्वाधिक मात्रा में तथा सबसे अधिक अशुद्ध सोने का सिक्का गुप्त काल में प्रयोग हुआ। इस समय स्कंद गुप्त शासक थे।
- (8) चाँदी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
- (9) मयूर शैली का सिक्का गुप्त काल में समुद्र गुप्त के समय प्रयोग में लाया गया। इस सिक्के का प्रचलन गुप्त काल में सर्वाधिक था।
- (10) कौड़ी का प्रयोग भी गुप्त काल में ही हुआ।
- (11) चमड़े का सिक्का हूमायूँ के शासन काल में सियाबुद्धीन ने प्रारम्भ किया।
- (12) रूपये का प्रयोग शेरशाह शूरी ने किया।
- (13) दाम का प्रारम्भ शेरशाह शूरी ने ही किया था।
- (14) सोने की अशर्फी का प्रारम्भ भी शेरशाह शूरी ने ही किया था।

### “अभिलेख”

- ❖ पत्थरों को खोदकर लिखना अभिलेख कहलाता है।
- ❖ छोटे पत्थरों पर लिखना शिलालेख कहलाता है।
- ❖ स्तम्भ के समान ऊँचे पत्थरों पर लिखना स्तम्भ लेख

कहलाता है।

- ❖ अभिलेखों का अध्ययन एपिग्राफी कहलाता है।

### प्रमुख अभिलेख-

- ❖ विश्व में अभिलेख लिखने का प्रारम्भ ईरान के शासक डेरियस ने किया था।
- ❖ पहला अभिलेख बोगजगोई से मिला जो तुर्की या Asia-minor में है।
- (1) **हाथी गुफा अभिलेख (उड़ीसा)**—इसे कलिंगराज खारवेल ने लिखा, इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है। युद्ध के समय कलिंग का राजा नंदराज था। (**गंगवंश**)
- (2) **ऐहोर अभिलेख (राजस्थान)**—पुलकेशिन-II ने हर्षवर्धन पर विजय की चर्चा की है।
- (3) **जुनागढ़ अभिलेख (गुजरात)**—उसमें रुद्रदायन ने सुदर्शन झील की चर्चा की है। उस झील को चन्द्रगुप्त मौर्य ने बनवाया था।
- (4) **प्रयाग अभिलेख (इलाहाबाद)**—इसमें समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान की चर्चा की है।
- (5) **भीतरी अभिलेख (गाजीपुर U.P.)**—स्कंदगुप्त ने हुणों पर आक्रमण की चर्चा की है।
- (6) **बिहार अभिलेख (बिहार शरीफ)**—स्कंदगुप्त ने अवश्मेघ यज्ञ की चर्चा की है।
- (7) **देवपाड़ा अभिलेख (बांग्लादेश)**—यह सेन वंश के शासक विजयसेन का है।
- (8) **ग्लवालियर अभिलेख (मध्य-प्रदेश)**—प्रतिहार शासक भोज का है।
- (9) **मंदसौर अभिलेख (MP)**—मालवा शासक यशोवर्मन का है।

### स्तम्भ लेख

यह स्तंभ के समान ऊँचे होते हैं।

- (1) **मेहरौली स्तम्भलेख (दिल्ली)**—चन्द्रगुप्त-II (विक्रमादित्य) का है। इस पर आज तक जंग नहीं लगा है, अर्थात् यह अपने रासायनिक गुण के लिए प्रसिद्ध है।
- (2) **मथुरा स्तम्भलेख (U.P.)**—चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य का है। इसमें सहिष्णुता की चर्चा है।
- (3) **एरण स्तम्भलेख (M.P.)**—भानुगुप्त का है। इसमें सती-प्रथा की चर्चा है।
- (4) **बौद्ध स्तम्भलेख (M.P.)**—वासुदेव का है। शुंग वंश की चर्चा है।
- (5) **हेलियोडोरस/गरस्डध्वज स्तम्भलेख (M.P.)**—इसमें भाग्नप्रद ने भागवत धर्म की जानकारी दी है।  
**विदेशी यात्री द्वारा भारत का वर्णन—**  
(1) हेरोडोटस—हिस्टोरिका

- (2) मेगारथनीज—इण्डिका
- (3) Periplus of the Erythrean Sea—अज्ञात
- (4) टॉलमी—ज्योग्राफिका
- (5) प्लिनी—Natural Historica
- (6) अलबरुनी—किताबुल—हिन्द/तहकीक—ए—हिन्द
- (7) मार्कोपोलो—चीन का यात्री
- (8) फाहियान—फौ—कूओ—थी—चन्द्रगुप्त—II
- (9) ह्वेन सांग—सी—क्यू—की—हर्षवर्धन
- ❖ **फाहियान (399 ई.) :** ‘फौ—कूओ—थी’ (पुस्तक) यह चन्द्रगुप्त—II (विक्रमादित्य) के दरबार में आया था। यह उस समय के भवन तथा कौड़ी की चर्चा की है।
- ❖ **शुंग-चुन (512 ई.) :** (चीन)—यह बंगाल के बोस में लिखा हुआ है।
- ❖ **ह्वेनसांग (629 ई.) :** सी—यू—की—यह हर्षवर्धन के दरबार में आया।
- ❖ इसने नालंदा विश्व—विद्यालय में अध्ययन तथा अध्यापन दोनों किया। इसे यात्रियों का राजकुमार कहते हैं।
- ❖ **इत्सिंग (673 ई.) :** चीनी यात्री था। यह त्रिपिटक की 400 प्रतियाँ (Photocopy) अपने साथ चीन लेकर गया था।
- ❖ **इन्वंटूता**—यह मोरक्को का रहने वाला था। यह 7000 किमी. की यात्रा करके मुहम्मद—बिन—तुगलक के दरबार में आया। इसकी पुस्तक ‘रेहला’ थी।
- ❖ **अब्दुल रज्जाक**—यह फारस का रहने वाला था। विजयनगर काल में आया था। इसका पुस्तक मतला—ए—साहेन है। यह कृष्णदेव राय के दरबार में आया था।

### “साहित्यिक स्रोत”

- ❖ लिखित स्रोत को साहित्यिक स्रोत कहते हैं। प्राचीन इतिहास की जानकारी का यह सबसे बड़ा स्रोत है।
- ❖ **गैर धार्मिक स्रोत**—इसका संबंध किसी भी धर्म से नहीं रहता है।  
**उदाहरण-** अर्थशास्त्र।
- ❖ **धार्मिक स्रोत**—इसका संबंध किसी न—किसी धर्म से रहता है।
- ❖ **गैर-ब्राह्मण**—वैसे स्रोत जिसका संबंध हिन्दु धर्म से नहीं रहता, उसे गैर-ब्राह्मण कहते हैं।
- ❖ **जैन-साहित्य**—यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।  
**उदाहरण-** 12 अंग, 12 उपांग, आधारांग सूत्र, भगवति सूत्र, मूल—सूत्र, आदि—पुरान।
- ❖ **बौद्ध साहित्य**—बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
- ❖ ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।

- ❖ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनद् की चर्चा है।
- ❖ बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।
- (1) **सूत पिटक**—यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का एनसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
- (2) **विनय पिटक**—यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
- (3) **अधिम्म पिटक**—इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।

वेद	ज्ञानी	ब्राह्मण ग्रन्थ	उपवेद	ज्ञानी
1. ऋग्वेद	द्यौत्	कौशतकीय, ऐतरेय	आयुर्वेद	प्रजापति
2. सामवेद	उद्गाता	पंचवीश	गंधर्ववेद	नारद
3. यजुर्वेद	अर्दु	तैतरेय, शतपथ	धनुर्वेद	विश्वामित्र
4. अथर्ववेद	ब्रह्मा	गोपथ	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

- ❖ **वेद**—वेदों की रचना ईश्वर ने की है। अतः वेद को अपौरुषेय कहा जाता है।
- ❖ गुप्त काल में कृष्ण द्वैवायन वे व्यास ने वेदों का संकलन (Collection) किया। प्रारम्भ में वेदों की संख्या 3 थी, अतः वेद को त्रयी कहा गया है।
- ❖ अथर्ववेद को बाद में शामिल किया गया इसलिए इसे वेदत्रयी में नहीं रखते हैं।
- (1) **ऋग्वेद**—इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त तथा 10580 ऋचाएँ हैं। ऋचाओं की अधिकता के कारण ही इसे ऋग्वेद कहते हैं। यह सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री मंत्र की चर्चा की है, जो सूर्य भगवान को समर्पित है।
- ❖ पहली बार शुद्र का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ।
- ❖ ऋग्वेद का दूसरा तथा 7 वाँ मंडल पुराना है क्योंकि इसका संकलन पहले ही हो गया था।
- ❖ पहला तथा 10 वाँ मंडल नया है, क्योंकि इसका संकलन बाद में हुआ।
- ❖ 9 वें मंडल में सोम देवता की चर्चा है।
- ❖ ऋग्वेद के ज्ञानी को द्यौत् कहते हैं।
- ❖ ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है, जिसमें चिकित्सा की चर्चा है। इसके ज्ञानी को प्रजापति कहते हैं।
- (2) **“सामवेद”**—इसमें 1875 मंत्र हैं। किन्तु वास्तव में 99 मंत्र ही सामवेद के हैं। बाकी मंत्रों को ऋग्वेद से ग्रहण कर लिया है।
- ❖ सामवेद में भारतीय संगीत के सात स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नी, की चर्चा है।
- ❖ ये संगीत यज्ञ के समय गाये जाते हैं।
- ❖ सामवेद ज्ञानी को उद्गाता कहते हैं।
- ❖ सामवेद का उपवेद गंधर्ववेद है।

- ❖ गंधर्ववेद के ज्ञानी को नारद कहते हैं।
- (3) **यजुर्वेद**—इसमें 1990 मंत्र हैं। इसमें युद्ध एवं कर्म—कांड की चर्चा है।
- ❖ इसे 2 भाग में बाँटते हैं—
  - (i) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
  - (ii) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- ❖ इसके ज्ञानी को अघर्यु कहते हैं। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। धनुर्वेद के ज्ञानी को विश्वामित्र कहते हैं।
- (4) **अथर्ववेद**—इसकी रचना सबसे बाद में उत्तर वैदिक काल में हुई इसमें 6000 मंत्र हैं।
- ❖ इसमें जादू—टोना, वसीकरण, इत्यादि की चर्चा है।
- ❖ **आरण्यक**—वैरी पुस्तक जिसकी रचना जंगल में की गई हो, आरण्यक कहलाता है।
- ❖ अथर्ववेद को छोड़कर सभी पुस्तक आरण्यक हैं।
- ❖ **वेदांग**—वेदों को भलि—भाँति समझने के लिए वेदांग की रचना की गई।
- ❖ वेदांग की संख्या 6 हैं—
 

<b>व्याजो</b>	<b>निशि</b>	<b>कछ</b>
व्याकरण ज्योतिष	निरुक्त शिक्षा	कल्प छन्द
- ❖ व्याकरण = अष्टाध्यायी (पाणिनी)
- ❖ ज्योतिष = वृहत् संहिता (वाराहमिहिर)
- ❖ निरुक्त = निरुक्त शास्त्र
- ❖ शिक्षा = शिक्षा शास्त्र
- ❖ कल्प = कल्प शास्त्र
- ❖ छन्द = छन्द शास्त्र
- > **पुराण**—इसकी रचना महर्ष ऋषि तथा उग्रश्रवा ने किया। इसकी संख्या 18 है।
- ❖ इसे पाँचवा वेद या वेदों का वेद कहते हैं।
- ❖ इससे प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है।
- > **विष्णु पुराण**—इससे मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।
- > **मत्स्य पुराण**—इससे सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है। इसमें विष्णु भगवान के 10 अवतारों की चर्चा है।
- > **वायुपुराण**—इसमें गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इसमें लिखा है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा तीन समुद्र का पानी पीता था।
- > **उपनिषद्**—इसका अर्थ होता है, गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। यह ब्राह्मणों के विरुद्ध राजपुतों की एक प्रक्रिया मानी जाती है।
- ❖ उपनिषद् 108 हैं, किन्तु 13 उपनिषद् को ही मान्यता प्राप्त है।
- > **वृहद् नारायण उपनिषद्**—यह सबसे बड़ा तथा प्राचीन है।
- > **कठोपनिषद्**—इसमें यम एवं नचिकेता की चर्चा है। इसमें ‘ॐ’ शब्द के महत्व को दर्शाया गया है।

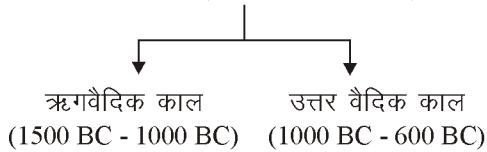
## इतिहास

- > **मुंडकोपनिषद्**—इसमें सत्यमेव जयते की चर्चा है।
- > **जबालोपनिषद्**—इसमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अर्थात् त्रिमूर्ति की चर्चा है।
- > **अलोपनिषद्**—यह सबसे बाद का उपनिषद् है। इसकी रचना अकबर के साथ हुई।
- > **स्मृति साहित्य**—इसमें प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है। स्मृति साहित्य की संख्या 36 है। विष्णु स्मृति + नारद स्मृति से गुप्त काल की जानकारी मिलती है।
- ❖ मनु स्मृति तथा याज्ञवल्य स्मृति से मौर्य काल की जानकारी मिलती है।
- ❖ याज्ञवल्य स्मृति में जुआ खेलने को उचित बताया गया।
- ❖ मनुस्मृति को धर्म शास्त्र कहते हैं। इसमें ऊँची जाति को वरीयता दी गई है। दलित तथा महिला को नीच दिखाया गया है।
- ❖ इसमें विवाह के लिए पुरुष की आयु 25 वर्ष तथा लड़की की आयु 12 वर्ष बताया गया है।
- ❖ इसमें 8 प्रकार के विवाह की चर्चा है।
- ❖ संस्कार की संख्या 16 होती है।
- ❖ दाह संस्कार अंतिम संस्कार होता है।
- ❖ ऋण तीन प्रकार के होते हैं—
  - (i) देवऋण (ii) ऋषिऋण (iii) पितृऋण।
- ❖ पुरुषार्थ 4 प्रकार के होते हैं—
  - (i) धर्म (ii) अर्थ, (iii) काम (iv) मोक्ष।
- ❖ आश्रम की संख्या 4 है—
- ❖ जन्म से 5 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था या शिशुवस्था कहते हैं।
  - (i) ब्रह्मचर्य—5 y - 25 y (गुरुकुल में शिक्षा)
  - (ii) ग्रहस्थ जीवन—25 y - 50 y (परिवार के साथ)
  - (iii) वानप्रस्थ—50y - 75y (सामाजिक तथा धार्मिक जीवन)
  - (iv) सन्यासी जीवन—75y - (वन में तपस्या)
- > **महाकाव्य**—महाकाव्य की संख्या 2 है—
  - (i) महाभारत तथा (ii) रामायण
- > **रामायण**—इसकी रचना वाल्मीकी ने की। प्रारम्भ में इसमें 12000 श्लोक थे, किन्तु वर्तमान में 24000 श्लोक हैं। उसे गुप्त काल में पूरा किया गया था।
- > **महाभारत**—इसकी रचना वेद—व्यास ने की। इसका प्रारम्भिक नाम जय—संहिता था। जिसमें 8800 श्लोक थे। वर्तमान में 1 लाख श्लोक हैं।
- ❖ महाभारत के खण्डों को पर्व कहा जाता है। इसमें कुल 18 पर्व हैं। सबसे महत्वपूर्ण पर्व भीष्म पर्व है। जिसमें अर्जुन तथ कृष्ण के वार्तालाप की चर्चा है। भीष्म—पर्व को भागवत् गीता या गीता कहा जाता है।

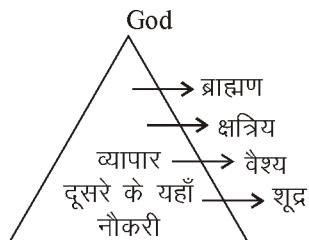
## प्राचीन इतिहास

- ❖ इसमें वैदिक काल से लेकर राजपूत काल तक का अध्ययन किया जाता है।

### वैदिक काल (1500 BC - 600 BC)



- ❖ वैदिक समाज के निर्माता आर्य थे।
- ❖ आर्य मध्य एशिया से आए थे। और भारत में सप्त सैधंव प्रदेश में (सात नदियों का प्रदेश या पंजाब, हरियाणा)।
- ❖ आर्यों की भाषा संस्कृत थी जो देवताओं की भाषा थी, जिस कारण आर्य स्वयं को श्रेष्ठ कहते थे। जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी, अर्थात् भारत के मूल निवासियों को अनार्य या निम्न कहा जाता था।
- ❖ दक्षिण भारत का आर्योकरण अगस्त ऋषि ने किया।
- ❖ उत्तर भारत का आर्योकरण राजा विदेह के पुरोहित (पडित) गौतम राहुगढ़ ने किया। किन्तु ये गंडक नदी को पार करके पटना नहीं पहुँच पाए जिस कारण अर्थर्वेद में पाटलीपुत्र को अछुतों की भूमि कही गई है। और यहाँ के गंगा जल को पवित्र नहीं माना गया है।
- ❖ इस समय सबसे प्रिय पशु गाय थी। जो समृद्धि का संकेत थी। गाय की हत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- ❖ राजा का मुख्य कार्य गाय की खोज करना (गविष्टि) था। उस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। वैदिक समाज ग्रामीण सभ्यता थी। ऋग्वेद के 7 वें मंडल में दशराज युद्ध की चर्चा है। जो आर्य तथा अनार्य के बीच हुआ। उसमें आर्य विजयी हुए। आर्यों का कबीला भरत था, इसी कारण उस समय जाति का निर्धारण कर्म के आधार पर होता था। किन्तु उत्तर वैदिक काल में जाति का निर्धारण वंश के आधार पर होने लगा। उत्तर वैदिक काल में ही लोहे की खोज हुई।



### वैदिक काल की नदियाँ—

- (i) झेलम — वितस्तता      (ii) व्यास — विपासा
- (iii) चिनाब — अस्किनी      (iv) सतजल — सत्रुदि

(v) रावी — परुषणि

(vi) गंडक — सदानीरा

(vii) सरस्वती — घग्घर

(viii) सिंधु — सिंधं।

- ❖ वैदिक साहित्य में सर्वाधिक चर्चा सिंधु नदी की है। क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

### वैदिक काल के देवता—

**(i) इन्द्र :** यह सबसे महत्वपूर्ण थे। इसकी चर्चा 250 बार हुई है। इन्हें युद्ध तथा वर्षा का देवता कहते हैं। इन्हें पुरांदर भी कहते हैं।

**(ii) अग्नि :** इसकी चर्चा 200 बार है।

**(iii) वरुण :** वायु

**(iv) सोम :** जंगल के देवता।

**(v) मारुत :** तुफान के देवता।

**(vi) रौद्र :** यह सबसे क्रोध वाले देवता थे। इन्हें पशुओं का देवता कहते हैं।

❖ गविष्टि का अर्थ होता है— गाय के लिए किया गया युद्ध।

❖ सीता का अर्थ होता था, हल से जोती गई जमीन पर पड़ा निशान।

### वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था—

❖ इस समय सबसे बड़ा पद राजा का होता था। जिसे जनता चुनती थी। राजा किसी भी निर्णय को लेने से पहले विभिन्न समितियों में बैठकर इसकी चर्चा करता था।

### वैदिक काल में तीन प्रमुख संगठन थे—

**(1) सभा**—यह निम्न (साधारण लोगों का संगठन था) उसकी चर्चा 8 बार है।

**(2) समिति**—यह उच्च वर्ग के लोगों का संगठन था, उसकी चर्चा 9 बार हुई है।

**(3) विद्य**—यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था इसकी चर्चा 122 बार हुई है।

**Note :** सभा तथा विद्य में भाग लेने की अनुमति महिलाओं को भी थी।

❖ वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसके मालिक को ग्रामिक कहते थे।

❖ सबसे बड़ी इकाई जन होती थी, जिसके मालिक को राजन कहते थे।

❖ उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हो जाने के कारण कृषि तथा अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगा और समाज धीरे-धीरे ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर अग्रसर होने लगा। जन का आकार बढ़कर जनपद हो

गया। और यह जनपद आगे चलकर महाजनपद का रूप ले लिया।

- ❖ महाजनपद का काल सिन्धु सभ्यता के बाद दूसरी नगरीय सभ्यता थी।
  - ❖ भारत में कुल 16 महाजनपद हुए हैं जिसकी चर्चा बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय में है।
  - ❖ सोलह महाजनपद में सबसे समृद्ध तथा सबसे शक्तिशाली महाजनपद, मगध मजाजनपद था, जो आगे चलकर इन जनपदों पर अधिकार कर लिया।
  - ❖ वैदिक काल में Tax को बालि कहते थे। जबकि देवताओं को खुश करने के लिए पशु बलि दी जाती थी।
  - ❖ इस समय घड़ा, मनका, या मृदभांड 4 प्रकार के होते थे—
    - (i) धूसर मृदभांड
    - (ii) काला मृदभांड
    - (iii) लाल मृदभांड
    - (iv) मिश्रित मृदभांड
  - ❖ सर्वाधिक प्रचलन धूसर मृदभांड का था। जिस पर चित्र बने होते थे, जिसके कारण इसे चित्रित धूसर मृदभांड भी कहते हैं।
  - ❖ मिश्रित मृदभांड लाल एवं काला दोनों का मिश्रण था।
  - ❖ इस समय 3 प्रकार के यज्ञ का प्रचलन था—
    - (i) अवश्मेघ यज्ञ**—इसमें घोड़ा को यज्ञ करके छोड़ दिया जाता था। जहाँ तक घोड़ा जाता था वहाँ तक का क्षेत्र राजा ले लेता था। घोड़ा को रोकने वाले व्यक्ति से राजा युद्ध करते थे।
    - (ii) वाजपेय यज्ञ**—यह राजा के शक्ति प्रदर्शन के लिए होता था। इसमें रथों की रेस लगायी जाती थी।
    - (iii) राजशेय यज्ञ**—राज्याभिषेक के समय इस यज्ञ को किया जाता था।
  - ❖ उत्तर वैदिक काल में जब अति रंजी खेटी से लोहे की खोज हुई तो, उत्तर वैदिक काल की अर्थव्यवस्था पश्चापालन के स्थान से कृषि पर आधारित हो गई।
  - ❖ वैदिक काल में षष्ठ दर्शन दिए गए—
    - (i) सांख्य दर्शन — कपिल
    - (ii) व्याय दर्शन — गौतम
    - (iii) योग दर्शन — पतंजलि
    - (iv) वैशेषिक दर्शन — कणाद
    - (v) उत्तर मिमांसा — वादरायण
    - (vi) पूर्वी मिमांसा — जैमिनी

सिन्धु सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता में अन्तर-

सिंधु/हड्पा सभ्यता	वैदिक सभ्यता
1. नगरीय थी	ग्रामीण थी
2. मातृ सतात्मक	पितृ सतात्मक
3. प्रमुख पशु बैल	प्रमुख पशु गाय
4. नियोजन	सामाजिक नियोजन
5. युद्ध से परिचित नहीं थे	गाय के लिए युद्ध होता था
6. कांसे की खोज	लोहे की खोज
7. कृषि + व्यापार	कृषि + पशुपालन
8. शिव तथा मातृदेवी की पूजा	इन्द्र महत्वपूर्ण देवता

## भारत के प्रमुख धर्म

- ❖ 6 वीं शताब्दी में भारत में कुल 72 संप्रदायों का विकास हुआ, जिसमें जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक संप्रदाय लिंगायत, कापालिक, शैव धर्म और वैष्णव धर्म प्रमुख हैं।

जैन धर्म

- ❖ इस धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे। जैन धर्म के प्रवर्तक को तीर्थकर कहा जाता है।
  - ❖ ऋषभदेव पहले तीर्थकर थे।
  - ❖ तीर्थकर का अर्थ होता है, दुःख से परे संसार रूप सागर को पार कराने वाला।
  - ❖ जैन धर्म के 23 वें तीर्थकर पारशर्णनाथ थे। इन्हें झारखण्ड के सम्बेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ती हुई, जिस कारण सम्बेद शिखर का नाम पारसनाथ की चोटी हो गया।
  - ❖ ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्होंने चतुरायण धर्म दिया जो निम्नलिखित है—
    - (i) झूठ न बोलना।
    - (ii) धन संग्रह न करना।
    - (iii) चोरी न करना।
    - (iv) हिंसा न करना।
  - ❖ जैन धर्म के 24 वें तिर्थकर एवं अंतिम तिर्थकर महावीर स्वामी हैं। इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
  - ❖ इनके पिता सिद्धार्थ थे, जो ज्ञातृक कुल के राजा थे। इनकी माता त्रिशला थी। जो लिङ्छिवी नरेश चेटक की बहन थी। इनके बड़े भाई नंदीवर्मन थे। इनका जन्म 640 ई.पू. वैशाली के कुंडग्राम में हुआ था। इनकी पत्नि यशोदा थी। इनकी बेटी प्रियदर्शनी (अन्नोज्या) थी। दामाद जमालि था। 30 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिए। 12 वर्ष के कठोर तपस्या के बाद जामिक ग्राम में एक साल वृक्ष के नीचे ऋजुपतिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ती हुई। ज्ञान प्राप्ती को ‘कैवल्य’ कहते हैं। ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्हें कैवलीन, जीन या निग्रोथ कहा गया। जीन का अर्थ होता है, विजेता जबकि निग्रोथ का अर्थ होता है, बंधन से मुक्त।

- ❖ इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में दिया था। जबकि अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- ❖ ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने पंचायन धर्म दिया जो निम्नलिखित है—
  - (i) झूठ नहीं बोलना।
  - (ii) धन संग्रह नहीं करना। (अपरिक्षेय)
  - (iii) चोरी नहीं करना। (उस्त्रव)
  - (iv) हिंसा नहीं करना।
  - (v) ब्रह्मचर्य (विवाह नहीं करना)।
- ❖ महावीर स्वामी ने त्रिरत्न दिए जो निम्नलिखित हैं—
  - (i) सम्यक ज्ञान
  - (ii) सम्यक विश्वास
  - (iii) सम्यक आचरण।
- ❖ महावीर स्वामी ने ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जिस कारण वे मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किए। इन्होंने पुनर्जन्म को माना और पुनर्जन्म का सबसे बड़ा कारण आत्मा को बताया। आत्मा को सताने के लिए इन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के बाद पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाएगी।
- ❖ महावीर स्वामी ने अंहिसा पर सर्वाधिक बल दिया, जिस कारण उन्होंने कृषि तथा युद्ध पर प्रतिबंध लगा दिए। महावीर स्वामी के दिए गए उपदेशों को चौदह पूर्वी नामक पुस्तक में रखा गया जो जैन धर्म की सबसे प्राचीन पुस्तक है।
- ❖ महावीर स्वामी ने अपेन उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
- ❖ 468 ई.पू. पावापुरी में इनकी मृत्यु हो गई।
- ❖ भद्रबाहु तथा स्थूलबाहु इनके दो सबसे प्रिय अनुयायी थे।
- ❖ मौर्य काल में मगध पर 12 वर्षीय भीषण अकाल पड़ा जिस कारण भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में कर्नाटक चले गए। इन्हीं के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य आया था। जिसने कर्नाटक के श्रवण बेलगोला में संलेखना से प्राण त्याग दिये। इस भीषण अकाल में भी स्थूलबाहु तथा उसके अनुयायी मगध में ही रुके रहे। जब अकाल खत्म हो गया तो भद्रबाहु मगध लौट आया। किन्तु इन दोनों में विवाद हो गया। भद्रबाहु के नेतृत्व वाले लोग निर्वस्त्र रहते थे, जिन्हें दिगम्बर कहा गया। जबकि स्थूलबाहु के नेतृत्व वलो लोग श्वेत वस्त्र पहनते थे। जिसे श्वेताम्बर कहा गया।
- ❖ जैन धर्म के विस्तृत प्रचार के लिए 2 जैन संगितीयाँ हुई हैं।
- ❖ पहली जैन संगिती 300 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता स्थूलबाहु ने किया। उसी में भद्रबाहु ने 12 अंग नामक पुस्तक की रचना की।
- ❖ द्वितीय जैन संगिती—यह छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी में हुई। उसकी अध्यक्षता देवाधिश्रमण ने किया। उसी संगिती में 12 उपांग की रचना की गई।

### प्रमुख जैन मंदिर-

- (i) मौर्य काल में मथुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।
  - (ii) कर्नाटक में चामुंड शासकों ने गोमतेश्वर का जैन मंदिर बनवाया जिसे बाहुबली का मंदिर कहते हैं।
  - (iii) मध्यप्रदेश में चंद्रेल शासकों ने खजुराहों में जैन मंदिर बनवाया।
- Note :** खजुराहों हिन्दु और जैन दोनों का पवित्र स्थल है। जबकि अंजता बौद्ध, जैन और हिन्दु तीनों का पवित्र स्थल है।
- (iv) राजथान में माऊंट आबु पहाड़ी पर दिलवाड़ा का जैन मंदिर, विमलशाह के सामंत (अधिकारी) वस्तुपाल तथा तेजपाल ने बनवाया।

### श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में अन्तर-

श्वेताम्बर	दिगम्बर
1. इसे स्थूलबाहु ने प्रारम्भ किया	इसे भद्रबाहु ने प्रारम्भ किया।
2. ये सफेद वस्त्र पहनते थे	ये निर्वस्त्र रहते थे
3. महिलाओं को मोक्ष मिल सकता है	महिलाओं को मोक्ष नहीं मिल सकता।
4. 19वें तिर्थकर मल्लीनाथ महिला थी।	19वें तिर्थकर मल्लिनाथ पुरुष थे।

चिन्ह

- (1) ऋषभदेव – वृषभ (सांड)
- (2) पारसनाथ – सर्प का फन
- (3) महावीर स्वामी – शेर

### बौद्ध धर्म

- ❖ इस धर्म का प्रारम्भ महात्मा बुद्ध ने किया।
- ❖ इनके बचन का नाम सिद्धार्थ था।
- ❖ पिताजी – शुद्दोधन
- ❖ माताजी – महामाया
- ❖ मौसी – प्रजापति गौतमी (इन्होंने ही बुद्ध को पाला था) क्योंकि जन्म के 1 सप्ताह बाद ही महामाया की मृत्यु हो गई।
- ❖ घोड़ा – कंथक
- ❖ सारथी – चाण/चना।
- ❖ पत्नि – यशोधरा (16 वर्ष)
- ❖ बेटा – राहुल
- ❖ जन्म स्थान – नेपाल के लुंबनी में
- ❖ कूल – शाक्य कूल
- ❖ जन्म – 563 ई.पू.
- ❖ मृत्यु – 483 ई.पू. (80 वर्ष)

- ❖ सिद्धार्थ को तथागत कनकमुनि तथा शाक्यमुनि भी कहते हैं। इन्हें Light of Asia भी कहते हैं। ये अपने साम्राज्य में भ्रमण के दौरान व्यक्ति जीवन के 4 अवस्थाओं को देखा जिसके बाद इनके मन में वैराग्य (गृह त्याग) उत्पन्न हो गया।
 

(i) बृद्ध व्यक्ति	(ii) बीमार व्यक्ति
(iii) शव	(iv) सन्यासी।
- ❖ वैराग्य उत्पन्न होने के बाद ये 29 वर्ष की अवस्थ में गृह त्याग दिए। इन्होंने अलार-कलाम से सांख्य दर्शन की शिक्षा ली।
- ❖ रुद्रकराम से योग दर्शन की शिक्षा ली।
- ❖ रुद्रकराम को ही महात्मा बुद्ध का गुरु माना जाता है।
- ❖ महात्मा बुद्ध अपने 5 मित्रों के साथ सारनाथ के मृगदाब वन में लगभग 6 वर्षों तक कठोर तपस्या की। इसी वन में कन्या ने इनसे कहा कि वीणा को इतना न खींचो कि वह टूट जाए। और इतना कम भी न खींचों की वह बजे ही नहीं। इस बात को सुनकर महात्मा बुद्ध गया चले आए।
- ❖ गया में इन्हें वैशाख पूर्णिमा के दिन पीपल वृक्ष के नीचे निरंजना (फाल्गु) नदी के टट पर ज्ञान की प्राप्ति हो गई। ज्ञान प्राप्ति के बाद वह पीपल वृक्ष महाबोद्धी वृक्ष कहलाया।
- ❖ ज्ञान प्राप्ति के बाद ही इनका नाम सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध पड़ा। बुद्ध का अर्थ होता है प्रबुद्ध या ज्ञानी व्यक्ति।
- ❖ ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध सारनाथ गए। जहाँ उन्होंने अपने 5 मित्रों को उपदेश दिया। यह महात्मा बुद्ध का पहला उपदेश था।
- ❖ इन्होंने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ति में दिया इन्होंने श्रावस्ति के अंगुलीमाल डाकू को शिक्षा दी। इनके सबसे प्रिय शिष्य आनंद तथा उपालि थे।
- ❖ आनंद के कहने पर ही महात्मा बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति दी। और कहा कि अब बौद्ध धर्म ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। बौद्ध धर्म अपनाने वाली पहली महिला गौतमी थी। और दूसरी महिला आप्रपाली थी।
- ❖ बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला पुरुष तपट्यु तथा मल्लि था।
- **महात्मा बुद्ध ने 4 सत्य कथन कहे—**
  - (i) संसार दुःखों से भरा है।
  - (ii) हर दुःख का कोई—न—कोई कारण है।
  - (iii) सभी दुःखों का सबसे बड़ा कारण इच्छा है।
  - (iv) इस इच्छा पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
- ❖ इच्छाओं पर नियंत्रण पाने के लिए इन्होंने 8 मार्ग बताएँ। जिसे अष्टांगिक मार्ग कहते हैं। अष्टांगिक मार्ग का मुख्य

उद्देश्य था, व्यक्ति को बीच के रास्ते से चलना चाहिए, नहीं सरल और न ही कठिन।

- ❖ इन्होंने अपने अनुयायीओं को 10 ऐसी बातें करने को मना किया था, जिसे शील कहते हैं। शील की संख्या 10 है।
- ❖ महात्मा बुद्ध ने 3 दर्शन दिए।
  - (i) **अनेश्वरवाद**—अर्थात् ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं।
  - (ii) **शून्यवाद**—कोई भी व्यक्ति सर्वोपरी नहीं है न ही सर्व सत्तामान है।
  - (iii) **क्षणिकवाद**—संसार की सभी वस्तुएँ कुछ ही समय के लिए हैं। इनका विनास निश्चित है। अर्थात् ये सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं।
- ❖ बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धर्म एवं संघ होते हैं।
- ❖ महात्मा बुद्ध पावापुरी में चंदू नामक शिष्य द्वारा सुकरमास (मशरूम) भोजन में ग्रहण किए। इसके बाद इनकी तबियत बिगड़ने लगी और इन्हें डायरिया हो गया। और उत्तर प्रदेश के मल्ल महाजनपद में स्थित कुशीनगर में इन्होंने प्राण त्याग दिए।
- ❖ इनकी अस्थियों को 8 अलग—अलग स्थान पर भेज दिया गया। जिसे अष्ट महास्थान कहते हैं।
- ❖ महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार—प्रसार के लिए चार बौद्ध संगितियों का आयोजन किया गया।

संगिति	वर्ष	स्थान	राजा	पुराहित
I.	483 BC	राजगीर	आजातशत्रु	महाकश्यप
II.	383 BC	वैशाली	कालशोक	साबकमीर
III.	255 BC	पाटलिपुत्र	अशोक	मोगलीपुत्र तिस्स शिष्य
IV.	प्रथम	कुण्डलवन	कनिष्ठ	वसुमित्र (अध्यक्ष)
	172 ई शताब्दी		(II अशोक)	अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

- ❖ 4 वीं बौद्ध संगिती के बाद बौद्ध धर्म 2 भागों में बंट गया—
  - (i) **हिन्द्यान**—यह बौद्ध धर्म के उपदेशों में कोई भी परिवर्तन नहीं करते हैं।
  - (ii) **महायान**—यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन कर लेते हैं। आगे जाकर महायान शाखा शून्यवाद एवं बज्रयान शाखा में टूट गया।
- ❖ नागार्जुन शून्यवाद को मानते थे।
- ❖ बज्रयान शाखा बौद्ध धर्म के विनाश का कारण था। इसमें मदिरा, मूर्तिपूजन, वेश्यावृति की अनुमति थी।
- ❖ भागलपुर के विक्रमशीला विश्वविद्यालय, चीन, थाईलैंड etc. में बज्रयान शाखा है।
- **बौद्ध धर्म से जुड़े चिन्ह—**
  - (i) गर्भ — हाथी

- (ii) जन्म – कमल
- (iii) गृहत्याग – घोड़ा (महाभिनिष्ठम्)
- (iv) युवा अवस्था – सांड
- (v) ज्ञान प्राप्ति – बौद्धी वृक्ष (संबोधन)
- उपथम उपदेश – चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तन)
- समृद्धि – शेर
- निर्वाण – पदचिन्ह
- मृत्यु – स्तूप (महापरिनिर्वाण)

**Note:** महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु वैशाख (अप्रैल) महिने में पूर्णिमा के दिन हुई। वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं।

### जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म में समानता-

- (1) ईश्वर के अस्तित्व को नकार देना।
- (2) मूर्तिपूजा का विरोध करना।
- (3) कर्मकांड का विरोध करना।
- (4) पुनर्जन्म में विश्वास।
- (5) पुनर्जन्म से छुटकारा के लिए मोक्ष।
- (6) दोनों ही हिन्दु धर्म से दूटे थे।

### बौद्ध धर्म या जैन धर्म में अन्तर-

	बौद्ध धर्म	जैन धर्म
(1)	बौद्ध के अनुसार मोक्ष प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा इच्छा थी।	इसमें सबसे बड़ी बाधा आत्मा।
(2)	ज्ञान प्राप्ति को मोक्ष कहा गया।	इसमें ज्ञान प्राप्ति को कैवल्य कहा गया।
(3)	इसमें ज्ञान प्राप्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग बताया गया।	इसमें ज्ञान प्राप्ति के लिए संलेखना बताया गया।

### बौद्ध धर्म के आगे बढ़ने के कारण-

- (1) जैन धर्म की भाषा प्राकृत थी, जो बहुत ही कठिन थी। जबकि बौद्ध धर्म की भाषा पाली थी, जो उस समय की सबसे लोकप्रिय भाषा थी।
- (2) जैन धर्म में बहुत ही कठोर नियम थे। जबकि बौद्ध धर्म के नियम सरल थे।
- (3) जैन धर्म में महिलाओं को सम्मान नहीं दिया गया जबकि बौद्ध धर्म में महिला को बराबरी का अधिकार दिया गया।
- (4) जैन धर्म में ब्रह्मचर्य तथा अंहिसा पर बहुत अधिक ध्यान दें दिया जबकि बौद्ध धर्म ने इस और कोई ध्यान नहीं दिया।
- (5) जैन धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान था, जो असभ्य प्रतीत होता था, जबकि बौद्ध धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान नहीं था।

- (6) जैन धर्म में केवल दो ही संगितियां हुई, और वो भी 900 वर्ष के अंतराल पर, जबकि बौद्ध धर्म में चार संगितियां हुई वो भी 100 वर्ष के अंतराल पर।
- (7) जैन धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का समर्थन नहीं मिल सका। जैन धर्म को मानने वाला प्रमुख राजा चन्द्रगुप्त मौर्य तथा खारवेल थे, जबकि बौद्ध धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का संरक्षण मिला। बौद्ध धर्म मानने वाले प्रमुख राजा अशोक, कनिष्ठ, पालवंश, चीन, पूर्वी एशिया आदि।

### जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म दोनों के विनाश के कारण-

- ❖ दोनों ही धर्म हिन्दु धर्म के कुरितियों के विरुद्ध आवाज उठाकर आगे बढ़े हुए थे। इन लोगों ने मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड का विरोध किया। किन्तु कालांतर में इन लोगों ने भी कुरितियाँ आ गई। इन लोगों ने भी मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड प्रारम्भ कर दिये। दोनों धर्मों ने हिन्दु धर्म के वर्ण (जाति) प्रथा का विरोध किया किन्तु कालांतर में इनमें भी जाति व्यवस्था आ गई। बौद्ध तथा जैन मठों के मठाधीश धार्मिक बिन्दुओं पर कम ध्यान देने लगे तथा भोग-विलास में लग गए।

जैन तथा बौद्ध धर्म की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर शंकराचार्य ने हिन्दु लोगों को जागरूक किया साथ ही गुप्त काल के राजाओं ने हिन्दु धर्म में अनेक त्योहार इत्यादि जोड़कर हिन्दुओं को एकत्रित कर दिया।

### आजीवक संप्रदाय

- ❖ इस संप्रदाय के संस्थापक मोगलीपुत्रिस गोसाल थे।
- ❖ अशोक के पिता बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानते थे। अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को बहुत से गुफा दान में दिया था।

### भागवत धर्म

- ❖ इसके संस्थापक वासुदेव थे। इस धर्म में सबसे अधिक जोर भवित पर दिया गया। भागवत संप्रदाय वाले बलि, कर्मकांड तथा पशुहत्या का विरोध में थे।

### शैव धर्म

- ❖ इसमें भगवान शिव की उपासना की जाती थी। शिवलिंग का पहला साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिला है। किन्तु यह प्रामाणिक नहीं है।
- ❖ शिवलिंग का पहला प्रमाणिक साक्ष्य मत्स्य पुराण में मिला है।
- ❖ शैव धर्म को मानने वाले दक्षिण भारत में अधिक है। शैव धर्म को मुख्यतः 3 भागों में बांटते हैं।
- (i) **पशुपतिक**—ये शैव धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। इन्हें पंचार्थी भी कहते हैं।

- (ii) **कापालिक**—ये नर खोपड़ी में भोजन तथा जल ग्रहण करते हैं। ये मदिरापान करते हैं। अस्थि के भस्म को पूरे शरीर में लगाते हैं।

Ex. नागा साधु कापालिक होते हैं।

- (iii) **लिंगायत**—शैव धर्म की इस शाखा का विकास कर्नाटक में अधिक हुआ। इसका प्रारम्भ अल्लभ प्रभु ने किया।
- ❖ ये शिललिंग की पूजा करते हैं किन्तु शव को जलाते नहीं हैं, बल्कि दफनाते हैं।

### वैष्णव धर्म

- ❖ इसमें भगवान विष्णु का अधिक महत्व है। इसकी चर्चा पुराणों में मिलती है।
- ❖ पुराण में भगवान विष्णु के 10 अवतारों की चर्चा है—राम, परशुराम, कृष्ण तथा बौद्ध विष्णु के प्रमुख अवतार थे।
- ❖ इस धर्म को अवतारवाद भी कहते हैं। इसे मानने वाला पूर्णतः शाकाहारी होते हैं।

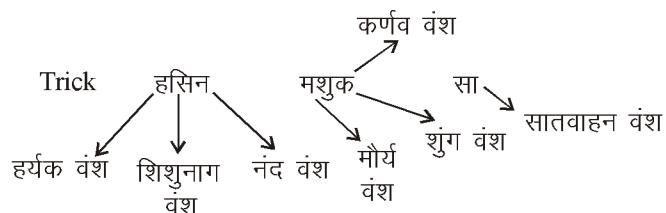
### “महाजनपद”

- ❖ 6 वीं शताब्दी ई.पू. अखंड भारत में द्वीतीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गई। जिसे महाजनपद कहते हैं।
- ❖ बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं—

	महाजनपद	राजधानी एवं क्षेत्र
(1)	गांधार	तक्षशिला (पाकिस्तान)
(2)	कम्बोज	हाटक (J&K पाक सीमा)
(3)	मत्स्य	विराट नगर (राजस्थान)
(4)	कुरु	इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली, हरियाणा)
(5)	सूर्यसेन	मथुरा (उत्तरप्रदेश)
(6)	कौशल	स्रावस्ति (उत्तरप्रदेश)
(7)	पांचाल	अहिंच्छंद कंपित्य (उत्तरप्रदेश)
(8)	चेदी	शक्तिमति (उत्तरप्रदेश)
(9)	वत्स	कौशांबि (उत्तरप्रदेश)
(10)	काशी	वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
(11)	मल्ल	कुशीनगर (उत्तरप्रदेश)
(12)	अस्मक	पोटला (महाराष्ट्र, गोदावरी नदी)
(13)	अवन्ति	उज्जैनी/महिसमती (मध्यप्रदेश)
(14)	वज्जि	वैशाली (बिहार हाजीपुर)
(15)	अंग	चंपा, भागलपुर मुंगेर (बिहार)
(16)	मगध	राजगढ़ी, पाटलीपुत्र (बिहार)

- ❖ गांधार महाजनपद पाकिस्तान में था। इसकी राजधानी तक्षशिला शिक्षा का केन्द्र थी।
- ❖ अस्मक दक्षिण भारत का एक मात्र महाजनपद था। जो गोदावरी नदी के तट पर था।
- ❖ उत्तरप्रदेश का मल्ल महाजनपद गणराज्य था।
- ❖ बिहार का वज्जि महाजनपद एक गणराज्य था।

- ❖ वज्जि की राजधानी वैशाली में लिच्छियों गणराज्य का शासन था। जो पूरे विश्व का सबसे पुराना गणराज्य है।
- ❖ सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध महाजनपद था। इसके दक्षिण में विध्याचल पर्वत/पश्चिमी में सोन नदी, उत्तर में गंगा तथा पूरब में फाल्गु जैसी नदियाँ इस महाजनपद के प्राकृतिक दुर्ग का कार्य करती थीं।
- ❖ मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।



### हर्यक वंश

इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था। तथा इसके संस्थापक बिम्बिसार पहले ऐतिहासिक शासक थे।

- ❖ बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- ❖ इनके समय अवन्ति के राजा चन्द्र प्रद्वोत को एक असाध्य रोग (लाइलाज बिमारी) हो गई। अतः इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज वैद्य जीवक को भेजा। जीवक के इलाज से चन्द्र प्रद्वोत स्वस्थ हो गए और उन्होंने अवन्ति को मगध के अधिन कर दिया।
- ❖ बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसमें वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- ❖ इसकी हत्या इसी के पुत्र अजात शत्रु ने कर दी।

### “अजातशत्रु”

- ❖ इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं, इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अतः इसे पितृ हन्ता कहते हैं।
- ❖ इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर की कीलाबंदी करा दी।
- ❖ अजात शत्रु के काल में ही सत्पर्वी गुफा में राजगीर में पहली बौद्ध संगिति हुई। इसमें अपने सहयोगी वर्षकार के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- ❖ इस युद्ध में उसने दो नए हथियार रथमूसल तथा महाशिला कंटक का प्रयोग किया।
- ❖ इसके पुत्र उदायिन ने इसकी हत्या कर दी।

### “उदायिन”

- ❖ इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए इसे भी पितृहन्ता भी कहते हैं।
- ❖ इसने गंगा एंव सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम पाटलीपुत्र रखा गया। इसने पाटलीपुत्र को पुत्र का नाम पटना रख दिया।
- ❖ उदायिन का पुत्र नागदशक एक आयोग्य शासक था। इसकी हत्या इसी के सेनापति शिशुनाग ने कर दी। और एक नया वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ महाभारत से यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले वृहद्रथ वंश का शासन था। जिसके संस्थापक वृहद्रथ थे।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक जरासंघ था किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक साक्ष्य बहुत ही कम है। अतः हर्यक वंश को ही पहला ऐतिहासिक वंश मानते हैं।

### “शिशा नाग वंश”

- ❖ इस वंश के संस्थापक शिशुनाग थे। इन्होंने अपनी राजधानी वैशाली को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कालाशोक था। जिसे समय द्वितीय बौद्ध संगति वैशाली में हुई।
- ❖ इसने पाटलीपुत्र को पुनः राजधानी बना दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक नंदी वर्मन था, जिसकी हत्या महापदम नंद ने कर दी।

### “नंद वंश”

- ❖ इस वंश के संस्थापक महापदम नंद थे। जो जाति के शुद्ध थे। इन्होंने राजपुतों का विनाश करके सर्वक्षत्रांतक की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इसने कलिंग जीतकर एकराट की उपाधि हासिल की।
- ❖ इस वंश का अगला शासक घनानंद था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।
- ❖ इसने अपने दरबार से चाणक्य का अपमान करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से घनानंद की हत्या कर दी। और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

### मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण-

- ❖ भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्तिशाली राज्य था।
- ❖ ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमज़ोर शासक थे। जिस कारण विदेशी

आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण दिया।

- ❖ भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हथमनी वंश के राजा ने किया। हथमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।
- ❖ इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज को हरा दिया।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक डेरियस-III को सिकंदर ने पराजित कर दिया। और हथमनी वंश का अंत कर दिया।

### “मकदूनिया/यूनान आक्रमण”

- ❖ यूनान के राजा फिलिप का पुत्र सिकन्दर था।
- ❖ सिकन्दर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसिडोनियन था।
- ❖ इसका जन्म मेसिडोनिया में 356 ई.पू. में हुआ।
- ❖ इसकी पत्ति रुखसाना/रेक्सोना था।
- ❖ इसके घोड़े का नाम बुकेफेराल/ब्यूसफेलरु/बज्जकेफला था।
- ❖ गुरु का नाम अरस्तु था।
- ❖ अरस्तु के गुरु प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा गया।
- ❖ प्लेटों के गुरु सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- ❖ गांधार की राजधानी तक्षशिला थी। वहाँ के राजा आम्बिक ने सिकन्दर की अधिनता स्वीकार ली।
- ❖ किन्तु सन्धि पुरु के राजा (पंजाब) पोरस, सिकन्दर से युद्ध किया।
- ❖ 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को ज्ञेलम। वितस्ता या हाईडेस्पिज का युद्ध कहते हैं।
- ❖ इस युद्ध में पोरस हार गए। किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकन्दर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकन्दर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- ❖ सिकन्दर हिन्दुकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- ❖ सिकन्दर की सेना को व्यास नदी (हाईफेनिया) पार करने से मना कर दिया।
- ❖ सिकन्दर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने नदी पार नहीं की। अतः सिकन्दर लौट गया।
- ❖ सिकन्दर का थल सेना के सेनापति सेल्युक्स निकेटर था, जबकि जल सेना का सेनापति निर्याक्स था।
- ❖ 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकन्दर की मृत्यु हो गई।
- ❖ सिकन्दर तथा उसके घोड़े बज्जकेफला का मकबरा बेबीलोन में है।

**Remark :**

- ❖ बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में है।
- ❖ सिकन्दर भारत से कुशल बढ़ी प्राप्त करना चाहता था।
- ❖ सिकन्दर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- ❖ सिकन्दर ने एशिया माईनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गांधार, कंबोज जीत लिया था।

**मौर्य वंश**

- ❖ मौर्य वंश के बारे में जानकारी के कई स्रोत हैं—
  - (i) **पुरातात्त्विक स्रोत**—जूनागढ़ अभिलेख, साहगौर अभिलेख।
  - (ii) **विदेशी यात्री का विवरण**—इण्डिका, (मेगरथनीज), आस्टिन, और जस्टिन।
  - (iii) **साहित्यिक स्रोत**—अर्थ शास्त्र, राजतरंगिणी, मुद्रा—राक्षस, जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ।
- ❖ मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य थे।
- ❖ इनकी माता का नाम मोरा था। ये निम्न जाती के थे। इनकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी।
- ❖ विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षक में नंद वंश के पतन तथा मौर्य वंश के उदय की चर्चा है।
- ❖ इनके अनुसार चाणक्य के सहयोग से चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द का अंत कर दिया और घनानन्द की पुत्री दुर्धरा से विवाह कर लिया।
- ❖ जब चन्द्रगुप्त मौर्य मगध का शासक था। तब यूनानी आक्रमण कारी सेल्युक्स निकेटर ने आक्रमण कर दिया, किन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसे पराजित कर दिया और उसकी बेटी कॉर्नेलिया (हेलेना) से विवाह कर लिया और दहेज में एरिया आराकोसिया, जेझोसिया तथा पेरिस, पेमियाई, कण्ठार, मकराना, तथा हेरात है।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्युक्स निकेटर को 500 हाथी उपहार में दिए थे।
- ❖ सेल्युक्स निकेटर ने अपना एक राजदूत मेगरथनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- ❖ मेगरथनीज की पुस्तक इण्डिका से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है। इण्डिका में लिखा है कि मौर्य काल में समाज 7 भागों में बंटा था तथा भारतीयों को लिखने में रुची नहीं थी।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल अभियान भी किया था, जिसकी जानकारी महारथान, अभिलेख से मिलती है।
- ❖ गोरखपुर में स्थित साहगौर ताम्र अभिलेख से अकाल के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा किए गए राहत कार्यों की चर्चा है।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु के नेतृत्व से

- मिली थी। भद्रबाहु के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य कर्नाटक के श्रवण बेलगोला में चला गया। जहाँ 298 BC संलेखना (संथारा) विधि से प्राण त्याग दिया।
- ❖ रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात) से यह जानकारी मिलती है, कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च से गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवायी थी।
- ❖ इस अभिलेख से चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिमी विस्तार की जानकारी मिलती है।
- ❖ मौर्य वंश के बारे में सर्वाधिक जानकारी चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र से मिलती है। जो एक राजनैतिक पुस्तक है। इस पुस्तक के 15 अधिकरण (Lesson) हैं। इस पुस्तक में राजा के राजत्व सिद्धान्त की चर्चा है, और कहा गया है कि एक मजबूत राजा को सप्रांग सिद्धान्त पालन करना होगा।

**अर्थशास्त्र का संस्करण समाजशास्त्र ने किया था**

जो निम्नलिखित हैं—

- |                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| (i) राजा (स्वामी)    | (ii) मंत्री (अमात्य) |
| (iii) जनपद (क्षेत्र) | (iv) दुर्ग (कीला)    |
| (v) कोश (धन)         | (vi) दंड (न्याय)     |
| (vii) मित्र।         |                      |

- ❖ चाणक्य को विष्णुगुप्त या कौटिल्य भी कहते हैं। ये तक्षशिला के ब्राह्मण थे और तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे।
- ❖ इनके पिता का नाम गुणी था।
- ❖ चाणक्य की बैइज्जती घनानन्द ने की थी। इसी के प्रतिशोध 1 के लिए इन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य का सहारा लिया और घनानन्द का अंत कर दिया।
- ❖ प्लूटोर्क ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोरस शब्द का प्रयोग किया है।
- ❖ जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- ❖ Willian Jones ने यह पहचान कराया कि सेण्ड्रेकाट्स ही चन्द्रगुप्त मौर्य हैं।

**“बिन्दुसार”**

- ❖ इसकी माता दूरधरा थी। यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधि ताकारी था।
- ❖ इसके दरबार में सीरिया के नरेश एटियोक्स ने अपना राजदूत डायमेक्स को भेजा।
- ❖ इसे मेगरथनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- ❖ बिन्दुसार ने सीरिया के नरेश से अंजीर मीठा, शराब तथा दार्शनिक मांगा था।
- ❖ वहाँ के राजा ने अंजीर तथा मीठी शराब दिया किन्तु दार्शनिक ने लेने से मना कर दिया क्योंकि सीरिया में दार्शनिक का व्यापार नहीं होता है।

- ❖ बिन्दुसार के दरबार में मिस्र के राजा फिलाडेल्फ ने अपना राजदूत डायनोसियास को भेजा।
- ❖ बिन्दुसार के समय तक्षशिला (कश्मीर) में दो बार विद्रोह हुए।
- ❖ उस समय तक्षशिला का राजकुमार बिन्दुसार का बड़ा बेटा सुशीम था, जो इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।
- ❖ बिन्दुसार ने अपने छोटे पुत्र अशोक, जो इस समय अवन्ति का राजपाल था, उसे विद्रोह दबाने के लिए तक्षशिला भेजा।
- ❖ अशोक ने क्रूरता पूर्वक विद्रोह को दबा दिया।
- ❖ कल्हण की पुस्तक राजतरंगिनी से यह जानकारी मिलती है कि अशोक ने श्रीनगर की स्थापना की थी।
- ❖ बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानने वाला था।
- ❖ बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।
- ❖ बिन्दुसार को अमित्रघात भी कहते हैं।

### “अशोक”

- ❖ इसका जन्म 304 ई.पू. में हुआ (पाटलीपुत्र में)।
- ❖ बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक ने राजा बनने के लिए अपने 99 भाइयों की हत्या कर दी थी।
- ❖ 269 ई.पू. में अशोक ने अपना राज्याभिषेक कराया।
- ❖ राज्याभिषेक के 8 वें वर्ष अर्थात् 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया।
- ❖ कलिंग आक्रमण की जानकारी खारबेल के हाथीगुफा अभिलेख से मिलती है।
- ❖ इस अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय कलिंग का राजा नंद राज था।
- ❖ कलिंग में हुए भीषण नरसंहार को देखकर अशोक का हृदय परिवर्तित हो गया।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि अशोक ने हाथियों को प्राप्त करने के लिए कलिंग आक्रमण किया था।
- ❖ कलिंग आक्रमण के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- ❖ इसे बौद्ध धर्म अपनाने की प्रेरणा इसके भतीजे निग्रोथ से मिली जबकि बौद्ध धर्म की शिक्षा उपगुप्त ने दी थी।
- ❖ अशोक का बौद्ध धर्म उसका व्यक्तिगत धर्म था। उसने कभी भी बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया। किन्तु अशोक बौद्ध धर्म को संरक्षण देता था।
- ❖ अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने बेटे महेन्द्र एवं बेटी संघामित्रा को श्रीलंका भेजा।
- ❖ श्रीलंका के राजा ने सिंधली संप्रदाय को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक धार्मिक रूप से सहिष्णु था। अर्थात् वह किसी भी धर्म के साथ भेद-भाव नहीं करता था।

- ❖ अशोक ने आजीवक संप्रदाय के लोगों को गया में स्थित बराबर की पहाड़ियों में 4 गुफा—(i) सुदामा, (ii) कर्ण, (iii) चोपड़ा, (iv) विश्व झोपड़ी दान में दे दी।
- ❖ अशोक की 5 पत्नियाँ थी, जिसमें अशोक पर सर्वाधिक प्रभाव कारुवाकी का था।
- ❖ अशोक भारत का पहला ऐसा शासक था, जिसने अपने संदेशों को अभिलेख के माध्यम से जनता तक पहुंचाया।
- ❖ अशोक को अभिलेख लिखने की प्रेरणा ईराक के राजा डेरियस (दारा) या दायबाहु से मिली।
- ❖ अशोक के अभिलेखों की भाषा प्रकृति थी, जिसे 4 लिपियों में लिखा गया था—
  - (i) ब्राह्मी लिपि**—यह भारत में मिले हैं।
  - (ii) खरोटि लिपि**—यह पाकिस्तान से मिले हैं।
  - (iii) अरमाईक लिपि**—यह अफगानिस्तान से मिली है।
  - (iv) ग्रीक लिपि**—यह अफगानिस्तान के उत्तरी सीमा से मिली है।
- ❖ अशोक के अभिलेख को पढ़ने की पहली सफलता 1837 ई० में जेम्स प्रिंसेप को मिली।
- ❖ अशोक ने अपने अधिकतर अभिलेखों में अपना नाम देवनाम प्रियदर्शी (देवताओं का पसंद) लिखा है।
- ❖ मध्य प्रदेश के गुर्जरा तथा कर्नाटक की मास्की, नेदर तथा उदेगोलान अभिलेखों में अशोक का स्पष्ट नाम अशोक लिखा हुआ है।
- ❖ **भाबू अभिलेख**—राजरथान के भाबू अभिलेख में अशोक ने खुद को मगध का सम्राट बताया है।
- ❖ भाबू अभिलेख में इसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और सम्भू की चर्चा है।

### अशोक के लघु अभिलेख

- ❖ अशोक के 7 लघु अभिलेख मिले हैं—
  - (1) रुमनदई अभिलेख**—यह अफगानिस्तान के कांधार से मिलता है। जो आरमाईक लिपि में है। यह सबसे छोटा अभिलेख है। यह एक मात्र अभिलेख है जिसमें अशोक ने प्रशासनिक चर्चा न करके आर्थिक क्रिया कलाप की चर्चा की है।
  - (2) कौशाम्बिक अभिलेख**—(UP) इसमें अशोक ने अपनी पत्नि कारुवाकी द्वारा दिए गए दान की चर्चा की है। अतः इसे रानी का अभिलेख कहते हैं। अकबर ने इसे इलाहाबाद स्थापित कर दिया।
  - (3) टोपरा अभिलेख (हरियाणा)**—फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।
  - (4) मेरठ अभिलेख (UP)**: फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।
  - (5) रामपूर्व अभिलेख**—यह बिहार के चंपारण में है।

- (6) **लौरिया नंदन गढ़**—यह बिहार के चंपारण में है।  
 (7) **लौरिया अरेराज**—यह बिहार के चंपारण में है।

### अशोक के चतुर्दश अभिलेख

- (1) **प्रथम शिलालेख**—इसमें अहिंसा पर बल दिया गया है। और पशुबली पर रोक लगाया गया है।  
 (2) **द्वितीय शिलालेख**—इसमें पशु विकित्सा की चर्चा है साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य जैसे—चेर, पाण्ड, श्रीलंका, केरलपुत्र, सतीयपुत्र की चर्चा है, किन्तु चोल वंश की चर्चा नहीं है।  
 (3) **तृतीय शिलालेख**—इसमें अशोक ने 3 अधिकार राजुक, युक्तक तथा प्रदेशक का चर्चा किया है। जो धर्म के प्रचार के लिए थे।  
 (4) **चतुर्थ शिलालेख**—इसमें भैरिघोष (युद्ध) के स्थान पर धर्मघोष (बौद्ध) के नीति का चर्चा है।  
 (5) **5 वाँ शिलालेख**—इसमें धर्म महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है, जो धार्मिक जीवन की देख—रेख करता है।  
 (6) **6 वाँ शिलालेख**—इसमें अशोक ने कहा है कि मेरा अद्विकारी जनकल्याण के लिए जब चाहे मुझसे मिल सकते हैं।  
 (7) **7 वाँ शिलालेख**—इसमें अशोक ने विभिन्न धर्मों के आपसी समन्वय की बात कही है। यह सबसे बड़ा शिलालेख है।  
 (8) **8 वाँ शिलालेख**—इसमें अशोक के धर्म यात्रा की चर्चा है, जो इसके राज्याभिषेक से 8 वें वर्ष से प्रारम्भ होती है। राज्याभिषेक के 10 वें वर्ष — गया राज्याभिषेक के 20 वें वर्ष — लुम्बनी।  
 (9) **9 वाँ अभिलेख**—इसमें अशोक ने छोटे—मोटे त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया।  
 (10) **10 वाँ अभिलेख**—इसमें धर्म के महत्व के बारे में चर्चा है।  
 (11) **11 वाँ अभिलेख**—अशोक ने कहा है, कि मेरे अधिकारी ब्राह्मणों को न सताएं।  
 (12) **12 वाँ अभिलेख**—इसमें स्त्रियों के स्थिति में सुधार के लिए स्त्रिमहामात्रा नामक अधिकारी की चर्चा है।  
 (13) **13 वाँ अभिलेख**—इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है।  
 (14) **14 वाँ अभिलेख**—अशोक ने कहा है, कि मैंने ऊपर लिखे गए शिलालेख के अतिरिक्त बहुत से काम किए हैं, जो इसमें नहीं लिख गए हैं। इसके लिए लिखने वाला जिम्मेदार है, मैं नहीं।
- सर-ए कुना अभिलेख**—यह अफगानिस्तान के कांधार से मिला है। जो ग्रीक तथा अरमाईक भाषा में है।
- ❖ कलिंग अभिलेख में अशोक ने कहा है, कि संसार के सभी मानव मेरी संतान (पुत्र) हैं। मैं एक माँ की भाँति उसके सांसारिक तथा प्रलौकिक जीवन की कामना करता हूँ। अशोक ने कहा है, कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को योगधाम को देकर निश्चित हो जती है। उसी प्रकार मैं भी

- समाज की देख—रेख के लिए राजुक को नियुक्त किया है।  
 ❖ राजुक अच्छे व्यक्ति को पुरस्कृत कर सकते हैं। और गलत व्यक्ति को दंडित कर सकते हैं।  
 ❖ अशोक को अभिलेख लिखने के लिए पत्थर (उत्तरप्रदेश) के चुनार से मिले हैं।

### अशोक की धर्म यात्रा

- ❖ अशोक ने लोगों को नैतिकता सिखाने के लिए जो नियम कानून की संहिता बनाई उसे ही धर्म कहते हैं। अशोक का धर्म स्वनियंत्रण पर आधारित था।  
 ❖ अशोक ने कहा है कि व्यक्ति अपने माता—पिता की आज्ञा मानें। व्यक्ति ब्राह्मण तथा भिक्षुक का आदर करें।  
 ❖ व्यक्ति—दास तथा सेवकों के प्रति उदार रहे।  
 ❖ व्यक्ति को जिओ—और—जिने—दो का पालन करना चाहिए।

### मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था

- ❖ इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन तथा कारखाने थे। और शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र तक्षशिला था।  
 ❖ सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।

### मौर्यकालीन संगठन

- (i) **श्रेणी**—यह शिल्कारों का संगठन था।  
 (ii) **निगम**—यह व्यापारियों का संगठन था।  
 (iii) **सार्थवाह**—यह कारवां (काफिला) का संगठन था।

### मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- ❖ मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था बहुत ही विशाल थी। इस समय स्थायी तथा अस्थायी दो प्रकार के सैनिक रहते थे।  
 ❖ मौर्यकाल की सेना नन्दों से 3 गुनी थी।  
 ❖ जस्टिन ने कहा है, कि मौर्य की सैना डाकूओं का एक गिरोह था।

### प्रशासनिक व्यवस्था

- ❖ मौर्यकालीन प्रशासन एक केन्द्रीकृत शासन था। राजा को सलाह देने के लिए मंत्री परिषद् होते थे।  
 ❖ उच्च अधिकारियों को तीर्थ या माहामात्रा कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी।  
 ❖ प्रशासनिक अधिकारियों को अध्यक्ष कहा जाता था। इनकी संख्या 26 थी।

(1) सिताध्यक्ष — कृषि विभाग

(2) अकाराध्यक्ष — खनन विभाग

(3) लक्ष्मणाध्यक्ष — मुद्रा विभाग

(4) राक्षिन — पुलिस विभाग

(5) धर्मस्थली — दिवानी न्यायालय (धन)

- (6) कन्टक शौद्ध – फौजदारी न्यायालय (अपराध)
- (7) गुढ़ पुरुष – गुप्तचर
- (8) संस्था – स्थाई गुप्तचर
- (9) संचार – चलायमान गुप्तचर
- (10) आंटविक – जंगल का अधिकारी
- (11) समाहारता – Tax या कर
- (12) शानिधाता – कोषाध्यक्ष।

### मौर्यकालीन वास्तुकला-

- ❖ मौर्यकाल में लकड़ी के भवन हुआ करते थे, जो वर्तमान पटना के कुम्हर से मिले हैं। मौर्यकाल में पत्थर के कुशल कारीगर होते थे।
- ❖ अशोक ने मध्य-प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया है। जो सबसे बड़ा स्तूप है।
- ❖ अशोक ने (UP) के सारनाथ में अशोक स्तंभ बनवाया। जिस पर 4 पत्थर के शेरों को एक ही जगह रखा। जो अंहिसा का सूचक है। यही भारत का राष्ट्रीय चिन्ह भी है।
- ❖ मौर्यकाल में पत्थर की बनी सबसे महत्वपूर्ण कलाकृति पटना के दीदार गंज से मिला यह एवं यक्षिणी की मूर्ति है।
- ❖ अशोक के अभिलेख विभिन्न क्षेत्रों से मिले हैं, किन्तु पाटलीपुत्र से एक भी अभिलेख नहीं मिला है।

### सामाजिक जीवन

- ❖ अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया किन्तु यह दूसरे धर्मों का भी आदर करता था। हिन्दू धर्म त्यागने के बाद भी अशोक ने अपने नाम में देवनाम प्रियदर्शी जोड़ा, जो संस्कृत भाषा का है।
- ❖ अशोक ने 11 वें शिलालेख में आदेश दिया है, कि ब्राह्मणों को कोई नहीं सताए।
- ❖ अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को गया कि 4 गुफा दे दिया।
- ❖ अशोक ने पशुबली पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया। यज्ञ तथा कर्मकांड पर रोक लगा दिया जिस कारण ब्राह्मणों की आय में बहुत कमी आ गई।

### प्रशासनिक ढाँचा

- ❖ मौर्यकाल में सबसे बड़ा पद राजा का होता था, उसके नीचे युवराज होते थे।
- ❖ प्रांत का शासन प्रांतपति के पास था।
- ❖ विष (जिला), विषपति के नियंत्रण में रहता था।
- ❖ 10 गांवों का छोटा मालिक या गोप होता था। जो सबसे प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव हुआ करती थी। जो ग्रामिक (मुखिया) के नियंत्रण में रहती थी।
- ❖ मौर्यकाल में प्रांतों की संख्या 4 थी, लेकिन अशोक के समय

5 हो गई, जो निम्नलिखित हैं—

### प्रांत

- (1) उत्तरापथ –
- (2) दक्षिणापथ –
- (3) अवन्ति –
- (4) प्राचि (मध्य प्रदेश) –
- (5) कलिंग –

### राजधानी

- तक्षशिला (पाकिस्तान)
- स्वर्णगिरी (महाराष्ट्र)
- उज्जेनी (मध्य-प्रदेश)
- पाटलीपुत्र
- तोशली

**Note :** श्रीलंका के राजा अशोक के उपदेशों का पालन करते थे, किन्तु श्रीलंका अशोक के अधिन नहीं था।

- ❖ 232 ई.पू. (BC) पाटलीपुत्र में अशोक की मृत्यु हो गई।
- ❖ इसके बाद मगध की गद्दी पर अशोक का पुत्र कुणाल बैठा।
- ❖ अशोक का कोई भी उत्तराधिकारी योग्य नहीं था। मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहदरथ था। जो एक कमज़ोर तथा आयोग्य शासक था।
- ❖ इसके शासन काल में कलिंग नरेश खारवेल ने कलिंग को मगध से स्वतंत्र कर लिया।
- ❖ वृहदरथ का सेनापति पुष्टमित्र शुंग था जिसने सेना के निरीक्षण के दौरान वृहदरथ की हत्या कर दी और मौर्य वंश के स्थान पर शुंग वंश की स्थापना कर दी।

### मौर्य वंश के पतन के कारण

- ❖ अशोक का युद्ध नीति त्याग देना।
- ❖ अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव होना।
- ❖ अशोक ने बौद्ध भिक्षुकों को इतना दान दिया कि आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।
- ❖ पतन का सबसे बड़ा कारण अशोक के उत्तराधिकारियों का अयोग्य होना था। साथ ही विभिन्न अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए।

**Note :** मौर्य काल में वर्ष की शुरूआत आषाढ़ (जुलाई) महिने से होती थी।

### शुंग वंश

- ❖ मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- ❖ इस वंश के संस्थापक पुष्टमित्र शुंग थे।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (MP) था।
- ❖ पुष्टमित्र शुंग एक कट्टर ब्राह्मण था।
- ❖ इसने बहुत बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- ❖ पुष्टमित्र शुंग ने मध्य प्रदेश के साँची स्तूप की खिड़कियों को तांबे का कराया जबकि अरहुत (MP) स्तूल की खिड़कियों

- ❖ को पत्थर का करवाया।
- ❖ इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- ❖ पतंजलि ने महाभाष लिखा।
- ❖ पाणिनी ने अष्टध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- ❖ मनु ने मनुस्मृति लिखा।
- ❖ इसके समय दो यवन (विदेशी) आक्रमण हुए। दोनों ही यमन आक्रमण को पुष्टमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- ❖ पहले आक्रमण का नेतृत्व डेमेट्रियास ने किया।
- ❖ दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मियाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- ❖ मिलिंद (मियाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- ❖ इसकी जानकारी नागसेन की पुस्तक मालविकागिणमित्र में अग्निमित्र एवं मालिवका के प्रेम-प्रसंग की चर्चा है।
- ❖ पुष्टमित्रशुंग ने पंतजलि के नेतृत्व में अयोध्या में दो-दो अवश्येष यज्ञ करवाए।
- ❖ पुष्टमित्र शुंग ने विदर्भ (बरार) जीत लिया।
- ❖ कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्टमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- ❖ इस वंश के शासक भागवत के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोट्स आया था, जिसका गरुड़ध्वज अभिलेख मिला है।
- ❖ विदिशा स्थित इस अभिलेख से भागवत धर्म की जानकारी मिलती है। भागवत धर्म में विष्णु भगवान की पूजा होती थी।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्णव वंश की स्थापना कर दी।

### “कर्णव वंश”

- ❖ इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदीशा को बनाया।
- ❖ इस वंश में कुल 4 शासक हुए।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था जिसकी हत्या उसके मंत्री शिमुक ने कर दी। और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

### सातवाहन वंश (प्रतिष्ठान) A.P.

- ❖ इस वंश के संस्थापक सिमुक थे।
- ❖ प्रारम्भ में यह वंश महाराष्ट्र के क्षेत्र में था, किन्तु शक् राजाओं ने इन्हें महाराष्ट्र छोड़ने पर विवश कर दिया।
- ❖ सातवाहन वंश को आंध्र प्रदेश में स्थानान्तरित होना पड़ा। जिस कारण इन्हें आंध्र सातवाहन भी कहते हैं।

- ❖ सातवाहन की राजधानी महाराष्ट्र का प्रतिष्ठान थी।
- ❖ सातवाहन में सबसे योग्य शासक हाल था।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौतमी पुत्र सातकर्णी था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमी पुत्र सातकर्णी ने उसे पराजित कर दिया।
- ❖ इसकी जानकारी महाराष्ट्र के जोगलथंबी के मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर G.P.S. एवं दूसरी ओर नहपान बना है।
- ❖ इस वंश का अलगा शासक बसिष्टि पुत्र पुल्लुमाबी था।
- ❖ इसके समय पुनः उज्जैन के शक आक्रमण हुआ। इस बार शक आक्रमण का नेतृत्व रुद्रदामन कर रहा था।
- ❖ रुद्रदामन ने बसिष्टि पुत्र पुल्लुमापि (BPP) को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक यज्ञ भी सातकर्णी था।
- ❖ ब्राह्मणों का सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना शुरू किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शसकों ने किया।
- ❖ वेतन के बदले भूमि देने की सामंति व्यवस्था सातवाहन ने प्रारम्भ किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- ❖ सातवाहन समान मातृसतात्मक था।
- ❖ यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरुष ही होता था।
- ❖ इस समय सीसा (Pb) के सिक्का का प्रयोग होता है।
- ❖ चाँदी के सिक्के को कार्षापर्ण कहते थे।
- ❖ सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।
- ❖ ऐसा कहा जाता है कि सातवाहन काल की भूमि उस समय के सबसे उपजाऊ भूमि थी।

### मौर्योत्तर काल

- ❖ मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योग्य शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- ❖ मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं—  
I - Indo Greek  
S - शक्  
P - पहलव  
K - कुषाण

### Indo Greek (हिन्दू यूनानी)

- ❖ इनका क्षेत्र हिन्दुकुश पर्वत के समीप का बैकटेरिया था। अतः इन्हें बैकटेरियन शासक भी कहते हैं।
- ❖ हिन्दू यूनानी भारत में दो चरण में आए थे—
- ❖ **प्रथम चरण**—इसमें डेमेट्रियस ने पंजाब के साकल में 'डेमेट्रियस वंश' की स्थापना की।
- ❖ डेमेट्रियस ने सुंग राजा, पुष्यमित्र सुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- ❖ अगला शासक मिनान्डर बना। इसने भी सुंग राजा पुष्यमित्र सुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- ❖ इसे (मिनान्डर) बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- ❖ नागसेन एवं मिनान्डर के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्द पन्हों में है।

### “द्वितीय चरण”

- ❖ इसमें युक्रेटाईडिस ने तक्षशिला में युक्रेटाईडिस वंश की स्थापना की।
- ❖ इस वंश के शासक आन्तीआल ने अपना राजदूत हेलियोडोटस को सुंग राजा भागवत के दरबार में मित्रवत् संबंध स्थापित करने के लिए मेजा।
- ❖ हेलियोडोटस भागवत धर्म (विष्णु भगवान) से प्रभावित होकर इस धर्म को अपना लिया और इस धर्म के सम्मान में विदिशा (बैसनगर) में गरुडध्वज अभिलेख बनवाया।
- ❖ यह किसी राजदूत का एक मात्र व्यक्तिगत अभिलेख है।

### हिन्दू यूनानी की विशेषता-

- ❖ ये यवन से आकर भारत में बस गए अतः इन्हें हिन्दू यूनानी कहते हैं।
- ❖ इन्हें काली मिर्च बहुत ही पसंद थी। अतः काली मिर्च को यमन प्रिय कहा जाता है।
- ❖ भारत में पहली बार चित्रित सोने के सिक्के यूनानियों ने चलाया।
- ❖ यूनानियों ने भारत में खगोल, ज्योतिष, गणित तथा समय का गणना प्रारम्भ किया।

### “शाक वंश”/शिथियन वंश (90BC)

- ❖ शक मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- ❖ इन्हें सूची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया।
- ❖ शक राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- ❖ ये भारत में आकर 5 जगहों में बसे थे।  
 (i) कंधार (अफगानिस्तान)  
 (ii) तक्षशीला (पाकिस्तान)

(iii) मथुरा (UP)

(iv) उज्जैन (MP) (चेष्टक/यशोमति)

(v) नासिक (महाराष्ट्र) (भूमिका)

- ❖ मथुरा के राजूक शाक को मालवा के शासक ने 57 BC में पराजित कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लिया। इस उपलक्ष्य में उसने 57 ई.पू. विक्रम संवत् नामक Calander चलाया।
- ❖ भारतीय संविधान का यह मूल Calander था, किन्तु 1957 में शक् संवत् को अपना लिया गया।
- ❖ नासिक का शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र सातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- ❖ इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- ❖ सबसे प्रतापी शक् शाक उज्जैन का रुद्रदामन था।
- ❖ रुद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्ठि पुत्र पुल्लुमाची को पराजित कर दिया।
- ❖ रुद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- ❖ यह सरकृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है।
- ❖ इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- ❖ यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- ❖ रुद्रदामन ने इस झील का पुनर्निर्माण (जिर्णधार) अपने अधिकारी शुवीशख द्वारा करवाया।
- ❖ गुप्त शासक स्कंदगुप्त ने भी इस झील का पुनर्निर्माण करवाया।

**Note :** ब्राह्मी लीपि का आधुनिक रूप देवनागरी लीपि है। हिन्दी, सरकृत देवनागरी लीपि में लिखी जाती है।

- ❖ अंतिम शक् शाक रुद्रसिंह-III थे।
- ❖ गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए।
- ❖ शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्ठ के Calander का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत् कहते हैं।

### प्रेगोरियन कैलेंडर-

- ❖ यह सूर्य पर आधारित है।
- ❖ यह ईसा के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- ❖ इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।

- ❖ ग्रेगोरियन Calander के अनुसार आज 8 जनवरी, 2020 है।
- ❖ **विक्रम संवत्**—इसे मालवा शासक विक्रमादित्य IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।
- ❖ यह ग्रेगोरियन Calander से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत् में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calander में 57 जोड़ दिया जाता है।
- ❖ विक्रम संवत् के अनुसार आज 8 जनवरी (2020+57)= 2077 ई. है।
- ❖ इसी कारण संविधान लागू की तिथी 1949 को विक्रम संवत् में (1949+57) = 2006 कहता है।
- ❖ **शक् संवत्**—इसे कनिष्ठ ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय प्रारम्भ किया।
- ❖ यह ग्रेगोरियन Calander से 78 ई. बाद आया। अतः यह ग्रेगोरियन Calander से 78 साल पिछे है।
- ❖ शक् संवत् में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calander में 78 साल घटा दिया जाता है।
- ❖ आज शक् संवत् के अनुसार आज की तिथी 8 जनवरी (2020-78) = 1942 ई. है।
- ❖ विक्रम संवत् शक् संवत्, हिजरी Calander (मुस्लिम Calander) चन्द्रमा पर आधारित है। अतः इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पिछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत् में एक अतिरिक्त महिना जोड़ दिया जाता है।

### पहलव वंश

- ❖ ये ईरान/फारस/पर्सिया के थे, जिस कारण इन्हें पार्श्वियन कहा जाता है।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) को बनाया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक मिथ्रेडेट्स थे।
- ❖ इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोफर्मिस थे जिनका पाकिस्तान से “तख्त—ए—बड़ी” अभिलेख मिला है। यह खरोष्टि लिपी में है। इनके समय पूर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक ‘सेन्ट—..... भारत आया। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

### कुषाण वंश

- ❖ ये मध्य एशिया के निवासी थे।
- ❖ मध्य एशिया से यूचि कविता 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- ❖ कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के दौरान था।
- ❖ कुषाण वंश के संस्थापक ‘कुजुलकडफिसस’ थे।
- ❖ इन्होंने तांबे का सिक्का चलाया था।
- ❖ अगला शासक विम—कडफिसस बना, जो इस वंश का

- ❖ वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- ❖ कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक “कनिष्ठ” था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक् संवत् प्रारम्भ किया।
- ❖ इसने अपनी राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी ‘मंधूस’ को बनाया।
- ❖ कनिष्ठ ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का “भिक्षा—पात्र” तथा यहां के दार्शनिक अश्व—घोष को अपने साथ लेता गया।
- ❖ पार्श्व के कहने पर कनिष्ठ ने प्रथम सदी (102 ई.) में कश्मीर के कुण्डल वन में 4 थी बौद्ध संगिती का आयोजन किया।
- ❖ कनिष्ठ के दरबार में पाश्व, क्युमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- ❖ अश्वघोष ने बुद्ध—चरित्र लिखा।
- ❖ चारक ने चरक—संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- ❖ नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र में सापेक्षिकता के सिद्धान्त की चर्चा की है। अतः इन्हें भारत का आइंस्टिन कहते हैं।
- ❖ नागार्जुन बौद्ध धर्म के ‘शून्य वाद’ को जानते थे।
- ❖ 4 थी बौद्ध संगिती में बौद्ध धर्म हिन्दूयन तथा महायान में बंट गया।
- ❖ कनिष्ठ महायान को मानता था।
- ❖ महायान बौद्ध धर्म की एक सरल शाखा थी जिसमें भिक्षुक सोने के आभूषण धारण कर सकते थे तथा मौस खा सकते थे।
- ❖ सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्ठ के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ती पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- ❖ कनिष्ठ के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- ❖ कनिष्ठ के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलीप बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा बंदरगाह प्रमुख थे।
- ❖ अज्ञात की रचना “पेरिप्लस of the एरिथ्रीयन सी” (POAS) से यह जानकारी निकली है कि कनिष्ठ का सर्वाधिक व्यापार रोग से होता है।
- ❖ कनिष्ठ के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय अरब नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की।

### रेशम मार्ग (Silk Rout)

- ❖ यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।

- ❖ इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग कश्म तथा हिन्दुकूश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- ❖ कनिष्ठ ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था।
- ❖ रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्ठ कर (Tax) होता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।
- ❖ 105 ई. (लगभग) कनिष्ठ की मृत्यु हो गई।
- ❖ इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं हो, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- ❖ इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

### वास्तुकला या मूर्ति निर्माण कला-

- ❖ **गांधार कला शैली**—इसका विकास कनिष्ठ के समय हुआ। इसे मिश्रित शैली भी कहते हैं, क्योंकि इसमें यूनानी मौर्य, तथा शूंग काल की कलाएँ भी शामिल थी।
- ❖ इस कला में सर्वाधिक मूर्ति महात्मा बुद्ध की बनी।
- ❖ इस शैली में मूर्तियाँ काले पत्थर की होती थी।
- ❖ **मथुरा शैली**—इसे शुद्ध देसी शैली भी कहते हैं।
- ❖ इसमें भी मूर्तियाँ भगवान बुद्ध की बनी।
- ❖ इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग होता था।

### अमरावती शैली-

- ❖ इसका विकास आंध्र प्रदेश में सातवाहन काल में हुआ।
- ❖ इसमें हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ बनाई गई।



# इतिहास

## 'गुप्त वंश' (तीसरी सदी)

- ❖ गुप्त शासक वैश्य थे (विष्णु उपासक)।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि ये कुबाण शासकों के सामंत थे।
- ❖ इन्होंने बिहार के रथान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक श्री गुप्त थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- ❖ इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अतः इन्हें वार्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- ❖ इस वंश का वार्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने "राजा-रानी" प्रकार का सिक्का चलाया।

## "समुद्रगुप्त"

- ❖ यह कुमार देवी का पुत्र था। अतः यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- ❖ इसके बचपन का नाम कांच था।
- ❖ समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तार वादी थीं। अतः यह अशोक के विपरीत था।
- ❖ इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के व राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- ❖ जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे Tax (कर) वसूलता रहा।
- ❖ इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त को "धरणी बंध" कहा जाता है।
- ❖ इतिहासकार "B.S. SMITH" ने समुद्रगुप्त की तुलना "नेपोलियन" से की है।
- ❖ पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का धोड़ा 3 समुद्र का पानी पीता था, अर्थात् समस्त दक्षिण भारत समुद्र गुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- ❖ श्रीलंका के शासक ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा।
- ❖ समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दीया।
- ❖ समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी "प्रयाग प्रशस्ती" अभिलेख से मिलती है।
- ❖ यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- ❖ समुद्र गुप्त ने कष्णचरित्र पुरस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।

- ❖ इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक "वैश-भूषा" में दिखाया गया है।
- ❖ समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।
- ❖ समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- ❖ यह एक अयोग्य शासक था।
- ❖ इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- ❖ देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच के खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- ❖ इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुरस्तक देवी चंद्रगुप्तम् में मिलती है।

## चंद्रगुप्त-II

- ❖ इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- ❖ विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- ❖ इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- ❖ इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- ❖ इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- ❖ इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें "नवरत्न" कहा जाता था।
- ❖ नवरत्न में सबसे प्रमुख कालीदास, अमरदास, वराहमिहिर, धनवन्त्रि प्रसिद्ध थे।
- ❖ धन्वन्त्रि वैद्य थे।
- ❖ चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाहयान भारत आया।
- ❖ इसका यात्रा विवरण "फो-क्यू-की" है।
- ❖ चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- ❖ इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- ❖ इसे महायान शाखा का "OXFORD" कहा जाता है।
- ❖ विश्व का पहला विश्वविद्यालय "तक्षशिला" विश्व विद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- ❖ यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- ❖ विश्व का पहला "HOSTEL" सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय "नालंदा विश्वविद्यालय" था।
- ❖ 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- ❖ कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।

- ❖ स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- ❖ इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुण्डों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- ❖ इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- ❖ भानू गुप्त के “एरण” अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- ❖ इस वंश के विनाश का कारण हुण्डों का आक्रमण था।
- ❖ हुण्ड आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतों में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्टभूति थे।

### गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- ❖ गुप्तकाल की भाषा संरक्त तथा थी।
- ❖ वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- ❖ गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- ❖ इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्त्रोत भू-राजस्व था।
- ❖ यह 1/4 से लेकर 1/6 हो सकता था।
- ❖ भू-राजस्व को हख्य (नगद) या मेय (अन्नाज) के रूप में दिया जा सकता है।
- ❖ इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय का भी सर्वोच्च था।
- ❖ शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- ❖ इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान (D.M.) के पद पर था।
- ❖ फाहयान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छुआ-छूत) थी।
- ❖ निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज्ञ कहा जाता था।
- ❖ इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। वे देवदासी भी हो सकती थीं।
- ❖ इस समय बाल-विवाह, पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- ❖ इस समय वेश्वावति भी थी।
- ❖ वैश्यावति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- ❖ इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- ❖ अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- ❖ महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- ❖ 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- ❖ अजंता बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- ❖ गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गईं।
- ❖ गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व में सबसे ऊँची प्रतिमा

### “सुदर्शन झील”

बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आतंकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

### “हुण्ड”

- ❖ हुण्ड का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- ❖ इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- ❖ तारामान तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण्ड आक्रमणकारी थे।
- ❖ मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- ❖ स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण्ड आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- ❖ इसमें हुण्डों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग है।

### पुष्टभूति वंश/वर्धन वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक पुष्टभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।
- ❖ प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थे—  
(i) राजवर्धन (ii) हर्षवर्धन (iii) राजश्री
- ❖ राजश्री का विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ।
- ❖ मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- ❖ राजवर्धन में देवगुप्त की हत्या कर दी।
- ❖ गौढ़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दी। साथ ही इसने बौद्धी वक्ष को भी कटवा दिया।
- ❖ वर्तमान बौद्धी वक्ष छठी पीढ़ी का है।
- ❖ हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।
- ❖ हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी—  
(i) राजश्री का पता लगाना। (ii) साम्राज्य को संभालना
- ❖ हर्षवर्धन ने दिवाकर नामक बौद्ध मिष्ठुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- ❖ हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
- ❖ हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज का राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

दक्षिण-भारत

संगम काल (100 ई.-250 ई.)

## (1) प्रथम संगम—

## (2) द्वितीय संगम—

“संगम काल के राज्य”

- ❖ क झा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।
    - (1) चेर
    - (2) पांड
    - (3) चोल
  - ❖ संगम राज्य के बारे में जानकारी “इण्डका”, “अष्टाध्यायी” तथा “ऐतरेय-ब्राह्मण” ग्रन्थ से मिलती है।

चेर वंश

- ❖ इसने पत्नि पूजा (कणगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।
- ❖ चेर वंश का अंतिम शासक कुडकर्ईल जरेल था।
- ❖ दूसरी सदी के अंत में (190 ई.) चेर वंश समाप्त हो गया।

### पाण्ड वंश

- ❖ इसका अर्थ होता है— प्राचीन देश।
- ❖ यह मात सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ पांड राजाओं ने ही तीनों संगम का आयोजन किया था।
- ❖ पाण्ड वंश की प्रथम जानकारी मेगस्थनीज की पुस्तक “इण्डिका” से मिलती है।
- ❖ पाण्ड वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- ❖ इनकी राजधानी मदूरै थी।
- ❖ इनका राजकीय चिह्न मछली (कार्प) था।
- ❖ पाण्ड वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- ❖ इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेङ्गूजेलियन था।
- ❖ इसने 290 ई. में हुए “तलैया लंगानम्” के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक नलिल वकोडन था।
- ❖ 5वीं सदी आते—आते पाण्ड वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- ❖ पाण्ड वंश के राजाओं का रोम के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत रोम के राजा आगस्टसा के दरबार में भेजा था।
- ❖ पाण्ड वंश की राजधानी मदूरै को ल्योहारों का शहर कहते हैं।
- ❖ यहाँ का मिनाक्षी मंदिर विश्व—प्रसिद्ध है।

### चोल वंश

- ❖ इसका अर्थ होता है— नया देश।
- ❖ इसके बारे में प्रथम जानकारी पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
- ❖ चोल साम्राज्य तमिलनाडु के पूर्वी भाग में था।
- ❖ इसकी राजधानी “उरई—ऊर” थी।
- ❖ इनका राजकीय चिह्न बाघ था।
- ❖ उरई—ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व में प्रसिद्ध था।
- ❖ ऐसा कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र सौंप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
- ❖ चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था।
- ❖ कहा जाता है, कि कावेरी नदी का मैदान इतना उपजाऊ था कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर इतना अनाज उगाया जा सकता है कि 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।

- ❖ चोल वंश का पहला शासक “उरवहप्पहरे” था। इसने श्रीलंका जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वारा लाया और कावेरी नदी पर 160 km लंबा बाँध बनवाया।
- ❖ यह भारत का पहला बाँध था।
- ❖ इसे Grand बाँध कहते हैं।
- ❖ कारकाल ने पुहार नामक बंदरगाह बनवाया जिसे “कावेरी पटनम्” कहते हैं।
- ❖ एलारा तथा पेरुनरकिल्ली अन्य शासक था।
- ❖ चोल वंश 5वीं सदी आते—आते अत्यंत कमज़ोर हो गया और सामंती जीवन जीने लगा।
- ❖ 8वीं सदी में पुनः चोलों का उदय हुआ।

### संगम कालीन आर्थिक जीवन

- ❖ संगम काल सूती वस्त्र, मसाला, मोती, क वि तथा पशुपालन के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ इस समय के सूती वस्त्र पूरे विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध था।

### संगमकालीन व्यापार

- ❖ संगमकाल में रोम से सर्वाधिक व्यापार होते थे।
- ❖ तमिलनाडु के अरिकामेडू (पांडिचेरी) से रोम का सर्वाधिक व्यापार होता है।

### संगमकालिन जाति व्यवस्था-

- ❖ संगमकाल में उत्तर—भारत के विपरीत जाति व्यवस्था थी।
- ❖ यहाँ सामंत तथा दास में समाज बँटा हुआ था।
- ❖ यहाँ वर्ण व्यवस्था या उच्च—नीच की जाति व्यवस्था नहीं थी।

### संगम कालीन धार्मिक जीवन-

- ❖ संगमकाल में सबसे प्रमुख देवता मुरुगन थे, जिन्हें वर्तमान में सुब्रमण्यम कहा जाता है।
- ❖ दूसरे प्रमुख देवता कार्तिकी (गणेश जी के भाई) थे।

### संगमकालीन बंदरगाह-

- ❖ संगमकाल के तीनों ही वंश के पास अपने—अपने बंदरगाह थे।
  - चेर—बंदरगाह— (बंदर—चेर)
  - चोल—बंदरगाह— पुहार तथा उरई
  - पांड—बंदरगाह — शालीयूर एवं कोरकाय।

### संगमकालीन साहित्य-

- ❖ संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
- ❖ इन्हें तमिलकम् या द्विंद्र साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।
- (1) तोलकापियम-** इसका संबंध व्याकरण से है।
- (2) तिरुक्कूराल या कूराल-** इसे तमिल साहित्य का बाइबल (एजिल) कहते हैं।
- (3) जीवक चिन्तामणि-**

इसका संबंध जैन धर्म से है।

(4) **शिल पादिकारम-** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें तुप्रू (पायल) की कहानी है।

- ❖ राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्यी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धर्म को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेध कर वे मदूरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदूरै की रानी का पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दी गई।
- ❖ कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदूरै शहर नष्ट हो गया।

(5) **मणिमेखले-** इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोवलन तथा माध्यी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंततः बौद्ध धर्म अपना लिया था।

### वाकाटक वंश

- ❖ सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
- ❖ ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विन्ध्य शवित थे।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन थे। इन्होंने 4 अश्वमेघ यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ कराया।
- ❖ इस वंश के शासक रुद्रसेन का विवाह प्रभावति से हुआ।
- ❖ प्रभावति चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
- ❖ इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।
- ❖ समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
- ❖ वाकाटक की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालुक्य वंश का उदय हो गया।

### चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थीं—

- (i) वातापी
- (ii) कल्याणी
- (iii) बैंगी

### "वातापी का चालुक्य"

- ❖ वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- ❖ यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- ❖ इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।

- ❖ इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कीर्तिवर्मन-I था। इसे चालुक्य का निर्माता कहा जाता है।
- ❖ पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- ❖ इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर काँचीकोड़ की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीत कर वातापीकोड़ की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशियन-II की हत्या कर दी।
- ❖ पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II
- ❖ कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।
- ❖ किन्तु चालुक्य के अंदर बदले की भावना थी। ये राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का इंतजार कर रहे थे। ताकि राष्ट्रकूट का अंत किया जा सके।
- ❖ "कल्याणी का चालुक्य"
- ❖ चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- ❖ यहीं कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक था।
- ❖ इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने राजधानी मान्नखेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- ❖ सोमेश्वर को चोल शासक राजराम ने कई बार पराजित कर दिया जिससे अपमानित होकर सोमेश्वर ने तुंगभद्रा नदी में आत्महत्या कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- ❖ विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- ❖ इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- ❖ इन्होंने विक्रमांकदेव चरित्र नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इसके दरबार में मित्राक्षर विज्ञानेश्वर रहते थे। जिन्होंने मित्राक्षरा नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर-IV थे।

### “बैंगी का चालुक्य”

- ❖ यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बैंगी में थी।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- ❖ इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

### पल्लव वंश

- ❖ इस वंश की राजधानी कांची थी।
- ❖ इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- ❖ इसके दरबार में भर्वि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने कीरातुल जुकियम नामक पुस्तक लिखी है।
- ❖ इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुनः पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- ❖ इसके दरबार में दण्ड नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दस कुमार चरित्रम नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ 8वीं सदी के इस पल्लव वंश में शैव धर्म अधिक प्रचलित था।
- ❖ महेन्द्र वर्मन संगीत प्रेमी था।
- ❖ इसने कद्गाचार्य को संगीत की शिक्षा दी थी।
- ❖ नरसिंह वर्मन-I ने महाबलीपुरम में एक शिमय मंदिर बनवाया जिसे रथ मंदिर कहते हैं।
- ❖ नरसिंह वर्मन-I के दरबार में हवेनसांग आया था।
- ❖ नरसिंह वर्मन-II ने कांची में कैलाश मंदिर बनवाया। इसी के समय भारत में अरब आक्रमण प्रारंभ हो गए।

### चोल वंश (9वीं सदी) - तंजौर

- ❖ चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- ❖ पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- ❖ 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- ❖ चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- ❖ इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया।
- ❖ चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदूरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।

- ❖ इसकी जानकारी उत्तरमेस्कूर से मिलती है।
- ❖ परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक क ष्ण-III ने पराजित कर दिया।
- ❖ चोल वंश का अगल शासक राज-राज बना।
- ❖ इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इसने अपनी राजधानी तंजौर में “व हदेश्वर” मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- ❖ राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया मंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया तथा अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- ❖ इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- ❖ राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।
- ❖ चोल काल का स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- ❖ चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- ❖ चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- ❖ द्रविड़ शैली को विमान शैली भी कहते हैं।

### राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- ❖ इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्ति वर्मन-II को हराकर राष्ट्र कूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल सावित हुई।
- ❖ दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेट को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक क ष्ण-I को बनाया।
- ❖ जिसने महाराष्ट्र के एलोरा में कैलाश मंदिर बनवाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- ❖ इस वंश का अगला शासक अमोधवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी।

- ❖ इसने जीनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- ❖ कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- ❖ अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कण्ठ-III बना। इसने तकोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-1 को पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुनः स्थापना कर दी।
- ❖ तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

### पाल वंश (7वीं-11वीं)

- 7 से लेकर 11वीं सदी—** पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा के अनुयायी थे।
- ❖ पाल वंश विहार बंगाल के क्षेत्र में था।
  - ❖ पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
  - ❖ पालवंश के संस्थापक गोपाल थे।
  - ❖ उन्होंने विहार शरीफ में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
  - ❖ पाल वंश का अगला शासक धर्म पाल था।
  - ❖ इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रुका। धर्मपाल ने भागलपुर में विक्रमशीला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
  - ❖ अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरब यात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रुहमा शब्द से संबोधित किया था।
  - ❖ इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
  - ❖ महिपाल ने पाल वंश का विकास पुनः प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
  - ❖ इसने आति दिपकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में ब्रजयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया, जिस कारण पाल वंश के अंत हो गया। पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

### सेन वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे। इस वंश का अगला शासक विजय सेन था। विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इस वंश के अगले शासक वल्लभ

- सेन बनें। इन्हीं के काल में दानसागर तथा अद्भुत सागर नामक पुरस्तक की रचना की गई। जिनके दरबार में जयदेव रहते थे।
- ❖ जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।
- ❖ लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- ❖ सेन वंश की राजधानी लखनऊवी (नदियाँ) थीं।

### प्रतिहार वंश

- ❖ यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था। इस वंश के संस्थापक नागभट्ट थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक वत्सराज था। जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया, और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दी।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।

### चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- ❖ यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है। चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली को जन्म दिया।
- ❖ बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी हैं।
- ❖ चंदेल शासकों को प्रारंभिक कालिंजर थी, किन्तु बाद में इसे खजुराहो स्थानान्तरित किया गया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक नन्दुक थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- ❖ इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- ❖ इस वंश का अगला शासक “धंग” था।
- ❖ यह शिव भगवान को मानता था। इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ इसे कंदरिया महादेव मंदिर के नाम से भी जानते हैं।
- ❖ इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी की प्रतिमा है।
- ❖ धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक राज्यपाल की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर के भाग गया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक परिमार्दी था, जिसे पथ्योराज चौहान (III) ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।

- ❖ अंततः कुतुबद्दीन ऐबक ने पर्थी राज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

### कुछ छोटे राजवंश

- (1) मेत्रक वंश-** इसके संस्थापक महारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था। इसकी राजधानी बल्लभी थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।

- (2) कल्यूरी वंश-** (चेदी वंश)

- ❖ यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था। इस वंश के संस्थापक कोकल-I थे।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
- ❖ इसने विक्रमादित्य की उपाधी धारण की।

- (3) गौढ़ वंश-**

- ❖ यह बंगाल के क्षेत्र में था।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
- ❖ इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधी वक्ष को कटवाकर इसमें आग लगा दी।
- ❖ इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वतः ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

- (4) पूर्वी गंग वंश-**

- ❖ यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- ❖ इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पुरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- ❖ इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- ❖ इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

### काकतिया वंश (तेलंगाना)

- ❖ यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- ❖ इसके संस्थापक बीटा-I थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक रुद्र-I बना। जिसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक प्रतापरुद्र देव था, जिसके सामने मल्लिक काफूर ने आक्रमण किया।
- ❖ इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली। और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन के दरबार में भेट किया।
- ❖ इसके बाद यह वंश समाप्त हो गया।
- ❖ इस पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

### यादव वंश-

- ❖ यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- ❖ इसके संस्थापक भिल्लम-V थे।
- ❖ इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया। किन्तु इसकी वीरता को देखकर

अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

### होयशल वंश-

- ❖ ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होने अपनी राजधानी द्वार समुद्र को बनाया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन ने बेलूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- ❖ जिन्हें मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

### कश्मीर का इतिहास

- ❖ कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।
- ❖ इसमें तीन वंशों की जानकारी है—
  - (i) कार्केट वंश
  - (ii) उत्पल वंश
  - (iii) लोहार वंश
- (i) कार्केट वंश-** इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इनके दरबार में हेनसांग आया था।
- ❖ इस वंश का शासक तारापिंड सबसे क्रूर शासक था।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक “ललितादित्य मुक्तापिंड” था। जिसने मालवा के चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक जयपिंड था।
- ❖ 810ई. में जयपिंड की मत्यु हो गई और 9वीं सदी के प्रारंभ में कार्केट वंश समाप्त हो गया।

- (ii) उत्पल वंश-**

- ❖ इस वंश के संस्थापक अवन्ति वर्मन थे। इन्होने अवन्ति नामक नहर बनवाई।
- ❖ इस साम्राज्य पर यहाँ की महारानी दिव्या (विद्या) का प्रभाव सर्वाधिक था।
- ❖ इनकी मत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की रक्थापना कर दी

- (iii) लोहार वंश-**

- ❖ इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।
- ❖ इस वंश का शासक ‘र्हष’ एक योग्य शासक था।
- ❖ इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नीरों की उपाधि धारण की।
- ❖ यह एक विद्वान शासक था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक जयसिंह बना।
- ❖ इन्होंने के काल में “राजतरंगिणी” पुस्तक पूर्ण हुई थी।
- ❖ इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।

- ❖ यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- ❖ सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनूल-आबे-दीन' थे।
- ❖ इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

### राजपूत काल (800 से 1200)

#### पूर्व मध्यकाल (800-1200 ई.)

- ❖ राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- ❖ राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक "प थ्वी राज रासो" से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुण्ड (हवन कुण्ड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं—

  - (i) प्रतिहार
  - (ii) परमार
  - (iii) चालुक्य
  - (iv) चौहाण

(i) प्रतिहार— पीछे पढ़ चुके हैं।

#### (2) परमार वंश

- ❖ यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- ❖ इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- ❖ इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- ❖ इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- ❖ अंततः इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

### गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- ❖ यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- ❖ इसके संस्थापक मूल राज थे।
- ❖ इस वंश का शासक भीम—I के सामंत विमलसाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- ❖ महमूद गजनवी ने भीम—I के काल में ही सोमनाथ का मंदिर लूट लिया।
- ❖ इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हरा दिया।
- ❖ यह मोहम्मद गौरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- ❖ अंततः इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

### चौहान वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक वसुदेव (सिंह राज) थे।
- ❖ इस वंश के सबसे योग्य शासक अर्णुणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रह राज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत तात्त्व लिखा है।

- ❖ इस वंश के अगले शासक प थ्वीराज (III) चौहान थे।
- ❖ इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम (1191) युद्ध मोहम्मद गौरी को पराजित कर दिया।
- ❖ प थ्वीराज चौहान (III) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और प थ्वीराज-III विरोधी हो गए।
- ❖ जयचंद्र ने मोहम्मद गौरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192) प थ्वीराज चौहान (III) की हत्या कर दी।
- ❖ मोहम्मद गौरी ने 1194 में चंदवार के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।

### मध्यकालीन इतिहास

#### मुस्लिम आक्रमण



#### भारत पर अरब आक्रमण-

- ❖ भारतपर आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम अरब का मोहम्मद-बिन-कासिम था।
- ❖ इसने 712 ई. में रावर के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने 713 ई. में मुलतान को जीत लिया।
- ❖ इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी "अलमन्सुरा" को बनाया।
- ❖ मोहम्मद-बिन-कासिम ने भारत में जजिया कर लगाया।
- ❖ जजिया गैर मुसमानों से लिया जाने वाला एक-प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।
- ❖ M.B.K. में जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा।

(1) बच्चा

(2) बूढ़ा

(3) ब्राह्मण

(4) विकलांग

(5) औरत

(1) फिरोज-शाह-तुगलक ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।

(2) अकबर ने 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया।

(3) औरंगजेब ने 1679 ई. में पुनः जजिया कर लगा दिया।

(4) जजिया कर को अंतिम रूप से मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह) ने समाप्त किया।

#### भारत पर तुर्क आक्रमण

##### तुर्क आक्रमण

- ❖ भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- ❖ इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पराजित कर दिया।

- ❖ सुबुक्तगीन काबेटा महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गदी पर बैठा।
- ❖ इसने (1001 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार आक्रमण किए)।
- ❖ इसने 1018 ई. में कन्नौज को लूटा।
- ❖ 1025 ई. में सोमनाथ के मंदिर को लूटा।
- ❖ 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया।
- ❖ महमूद गजनवी के साथ फिरदौसी, अलबरुनी तथा उब्बि जैसे इतिहासकार आए थे।
- ❖ उत्ति ने किताब—उल—यामिनी की रचना की थी।
- ❖ फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरुनी ने किताबुल हिन्द लिखा।
- ❖ तहकीक—ए—हिन्द
- ❖ महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता है।

### तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण-

- ❖ तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- ❖ इसके दूसरे चरण का नेत त्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- ❖ मो. गौरी का मूल नाम मोईनुद्दीन मोहम्मद बिन शाम था। (शिहाबुद्दीन)
- ❖ 1173 ई. में यह शासक बना।
- ❖ 1175 ई. में इसने मुल्तान पर आक्रमण किया।
- ❖ 1178 ई. में इसने राजस्थान पर आक्रमण किया किन्तु वहाँ के शासक भीम-II ने इसे बुरी तरह से पराजित किया यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी।
- ❖ मोहम्मद गौरी लाहौर तथा उसके आस—पास के क्षेत्रों को जितता गया। इसने लाहौर को केन्द्र बनाया।
- ❖ इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो प थ्वी राज चौहान—III से विवाद हो गया।
- ❖ 1191 ई. के तराईन के (I) युद्ध में प थ्वी राज चौहान—III ने गौरी को पराजित कर दिया।
- ❖ 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से प थ्वी राज—III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- ❖ 1194 ई. के चंदावार के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने गढ़वाल शासक जयचंद्र को पराजित कर दिया।
- ❖ गौरी का सेनापति बख्तियार खिलजी ने 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- ❖ 1205 ई. में गौरी ने अपना अंतिम अभियान पंजाब के खोख्वर जातियों के विरुद्ध किया।

- ❖ 1206 ई. में दमयक नामक स्थान पर रामलाल खोख्वर ने मोहम्मद गौरी की हत्या कर दी। मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे—
  - (1) कुतुबुद्दीन ऐबक
  - (2) याल्दोज
  - (3) कुबाजा।

### दिल्ली सल्तनत ( 1206-1526 ई. )

- (1) वंश— गुलाब खिले तो सांस लो।
- (2) संस्थापक— ऐबक जल गया खीबो से
- (3) लंबा कार्यकाल— तुगलक सखो।

### गुलाम वंश ( 1206 से 1290 ई. )

इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।

### कुतुबुद्दीन ऐबक ( 1206-1210 )

- ❖ इन्होंने सुल्तान की उपाधी नहीं धारण की बल्कि मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ❖ ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अतः इन्हे हातिम कहा गया।
- ❖ ये लाखों में दान देते थे। अतः इन्हे लाख बर्खा भी कहते हैं।
- ❖ इन्हें पूरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- ❖ इनके दरबार में मिनहाज—उस—सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात—ए—नासरी पुस्तक लिखी है।
- ❖ इनके दरबार में हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज—जल—नासिर पुस्तक लिखी है।
- ❖ ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि यह किसी विद्यालय के स्थान पर बनाया गया है।
- ❖ ऐबक ने दिल्ली में कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद बनवायी जो भारत की पहली मस्जिद थी।
- ❖ ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे। ऐबक ने अफगानिस्तान के जाम मीनार से प्रेरित होकर दिल्ली (महरौली) में कुतुबमीनार बनवाई किन्तु पूरा नहीं कर सका।
  - (1) ऐबक कुतुबमीनार को 2 मंजिल बनवाया था, जबकि शेष 3 मंजिल को इल्तुतमिश ने पूरा किया। मोहम्मद—बिन—तुगलक के समय इस मीनार पर बिजली गिर गयी। फिरोज—शाह—तुगलक ने इसका पुनर्निर्माण किया।
  - (2) अल्लाउद्दीन खिजी इस मीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई मीनार बनवाना प्रारंभ किया, किन्तु इंजीनियरों की

गलती के कारण यह सफल नहीं हुआ।

- (3) अलाउद्दीन खिलजी ने कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई-दरबार बनवाया।
- ❖ 1210 ई. में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मौत हो गई।
- ❖ ऐबक का मकबरा लाहौर में है।
- ❖ ऐबक में अपनी राजधानी की लाहौर को बनाया था।

### आरामशाह ( 1210-1211 ई. )

- ❖ यह ऐबक का उत्तराधिकारी था, किन्तु अयोग्य था।
- ❖ 1212 ई. में इल्तुतमिश ने इसे हटाकर खुद शासक बन गया।

### इल्तुतमिश ( 1211-1236 ई. ) शम्प्सी वंश

- ❖ इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- ❖ 1215 के तराईन के III युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- ❖ शासक बनने से पहले यह बदायुँ (U.P.) का सूबेदार था।
- ❖ इसने अपनी राजधानी दिल्ली को बनाया।
- ❖ इसने शासक बनने के लिए खलिफा अल मुनतसीर बिल्लाह से खिल्अत (Degree) हासिल की।
- ❖ इसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- ❖ इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- ❖ इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरुद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गढ़ी में बनवाया।
- ❖ यह शुद्ध इस्लामिक पद्धति पर बना भारत का पहला मकबरा था।
- ❖ इल्तुतमिश ने न्याय मांगने के लिए लाल वस्त्र पहनने की परंपरा चलवाया।
- ❖ इल्तुतमिश ने वेतन के बदले भूमि दिया जिसे इक्ता व्यवस्था कहते हैं।
- ❖ इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहकार परिषद् बनाया जिसे तुर्कायं चिहलगाम या चालीसा दल कहते हैं।
- ❖ इसके समय जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अतः इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- ❖ इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संरक्षणक कहते हैं इसे गुलाम का गुलाम भी कहते हैं।
- ❖ 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुल्तान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

- ❖ इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद 40 सरदारों ने रजिया को शासक न बनाकर स्वनुदीन को शासक बना दिया।
- ❖ रजिया ने न्याय के लिए लाल वस्त्र पहनकर मस्जिद के आगे चली गई और जनता के हस्तक्षेप के बाद वह शासिका बनी।

### रजिया सुल्तान ( 1236-1240 ई. )

- ❖ यह पहली महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भाँति वस्त्र पहनकर शासन करने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।
- ❖ दिल्ली के मलिक याकूत के साथ रजिया के घनिष्ठ संबंध थे।
- ❖ तवरहिन्द (पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।
- ❖ दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- ❖ रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- ❖ इतिहासकारों का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।

### बहराम शाह ( 1240-1242 ई. )

#### अलाउद्दीन मसूद शाह ( 1242-1246 ई. ) नसीर-उद्दीन-शाह ( 1246-1266 ई. )

- ❖ यह एक मिर्त व्ययी (कम-खर्चीला) शासक था।
- ❖ यह टोपी सिलकर अपना जीवन-यापन करता था।
- ❖ इसने एक गुलाम को चालीसा दल में स्थान दिया यह गुलाम बलबन था।
- ❖ इसने बलबन को उत्तुग खाँ की उपाधि दीया।
- ❖ इसके समय बलबन की शक्तियाँ बहुत ही बढ़ गई थी।

### बलबन ( 1266-1287 ई. )

- ❖ यह इरान का रहने वाला था।
- ❖ इसने शजदा तथा पैगोस जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- ❖ इसने नौरोज त्यौहार भी प्रारंभ किया।
- ❖ इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- ❖ इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- ❖ इसने “रक्त एवं लौह” की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- ❖ बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- ❖ बलबन ने (U.P.) के गण-मुक्तेश्वर में एक मस्जिद बनवायी।

- ❖ कैकूबार
  - ❖ अगला शासक कैकूबार बना जो एक आयोग्य शासक था। इसने एक वर्ष तक शासन किया।
  - ❖ गुलाम वंश का अंतिम शासक क्यूमर्श था।
- 1290 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलाउद्दीन खिलजी भी कहते हैं।
1. कुतुबुद्दीन एबक
  2. आरामशाह
  3. इल्तुतमिश
  4. रुकनुद्दीन
  5. रजिया सुल्तान
  6. बहराम शाह
  7. अलाउद्दीन मसूद शाह
  8. नसीर-उद्दीन शाह
  9. बलबन/उब्लुग खाँ
  10. कैकूबार
  11. क्यूमर्श

### खिलजी वंश ( 1290-1320 ई. )

- #### जलाउद्दीन-फिरोज खिलजी ( 1290-1296 ई. )
- ❖ खिलजी वंश के संस्थापक जलाउद्दीन फिरोज खिलजी थे।
  - ❖ इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप ही शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
  - ❖ इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
  - ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
  - ❖ जलाउद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या कर दी।

### अलाउद्दीन खिलजी ( 1296-1316 ई. )

- ❖ इसके बचपन का नाम अली गुर्शप्प था।
- ❖ इसने सिकंदर की भांति विश्व विजय का अभियान चलाया। अतः इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदरए—सानी कहते हैं।
- ❖ इसने खलिफा के पद को मान्यता दीया।
- ❖ यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह निर्णय बदल दिया।
- ❖ इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई—मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु वह बहुत छोटा बन पाया।
- ❖ इसने कुब्बतुल—इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक Gate बनवाया।
- ❖ इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और

- सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।
- ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की पंरपरा लागू की। इसने शासक बनने के बाद 4 घोषणाएँ की।
  - (1) रथायी गुप्तचर की स्थापना
  - (2) दान में दी गई भूमि को खालसा भूमि (सरकारी भूमि) में परिवर्तन
  - (3) मद्यापान (नशा/शराब) पर प्रतिबंध
  - (4) छोटे त्योहार तथा अमीरों के मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया।
 इसके समय 4 प्रमुख कर थे—
  - (1) **जजिया**— यह गैर मुसलमानों से लिया जाता था।
  - (2) **जकात**— यह मुसलमानों के आय पर लिया जाता था।
  - (3) **खरात**— यह मुसलमानों का भूमि कर था।
  - (4) **खुम्स**— यह सैनिकों से लूट पर लिया जाने वाला कर था। मकान पर घरी नामक कर तथा चारागाह पर चरी नामक कर लिया जाता था।

### अलाउद्दीन खिलजी के विभाग-

- (i) दीवाने आरिज— सैन्य विभाग
- (ii) दीवाने इंशा— शाही आदेशों को पालन करवाना/पत्राचार विभाग
- (iii) दीवाने वजारत/विसारत— वजीर/P.M.  
यह प्रधानमंत्री का पद था, जो वजीर के नियंत्रण में था। यह सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- (iv) दीवाने (सातल)— यह विदेश विभाग था + धार्मिक मामले।
- (v) दीवाने रियासत— यह बाजार पर नियंत्रण रखता था।

### अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान-

- ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर—भारत तथा दक्षिण—भारत दोनों का अभियान किया।
- ❖ इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- ❖ अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक कर्ण देव को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खाँ कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दिनार में मिलिक काफूर (चंद्राम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- ❖ मिलिक काफूर को हजार दिनारी भी कहते हैं।
- ❖ गुजरात मार्ग में राजस्थान के शासक बाधा बन रहे थे।
- ❖ 1301 ई. में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर जीता।
- ❖ 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जीता।
- ❖ चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावति के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।

- ❖ राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- ❖ अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मिलिक काफूर को दीया।
- ❖ मिलिक काफूर ने 1307 ई. में देवगिरि के शासक रामचंद्र देव को पराजित कर दिया। किन्तु रामचंद्र देव की वीरता को देखकर अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के नौसारी का जागीरदार बना दिया।
- ❖ 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिया। प्रताप रुद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई ओर उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनत स्वीकार कर ली।
- ❖ 1310 ई. में मजिलक काफूर ने होयशल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारासमुद्र को नहीं जीत सका।
- ❖ 1311 ई. में मिलिक काफूर ने पांड वंश की राजधानी मदूरे जीत ली।
- ❖ अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि “मेरे घर में 10 दरवाजे हैं”।

### अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति-

- (i) जफर खां
  - (ii) नूरसत खां
  - (iii) उलुग खां
  - (iv) मिलिक काफूर
- ❖ यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलिफा से करता था।
  - ❖ मंगोलों से लड़ते समय जफर खां की मर्त्यु हो गई थी।
  - ❖ 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मर्त्यु हो गई।
  - ❖ अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोल तथा सल्तनत के बीच सिंधु नदी को सीमा बनाया गया।
  - ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने खलिफा के आदेशों की अवहेलना कर दी।
  - ❖ इतिहासकार बरनी कहते हैं कि जब अलाउद्दीन शासक बना तो इस्लामिक कानून (सरियत) से खुद को मुक्त घोषित कर दिया और एक नए धर्म प्रारंभ करने का प्रयास भी किया।
  - ❖ अलाउद्दीन खिलजी तुर्क कबीले का था। इसने सैनिकों के लिए वेश-भूषा (ड्रेस) का निर्धारण किया।
  - ❖ यह सल्तनत काल पहला शासक था जिसने भूमि की पैमाईश (माप) करवाया और उसी आधार पर लगान (tax) का निर्धारण किया।
  - ❖ इसने कुल उपज का 50% कर के रूप में निर्धारित किया।

- ❖ कर चोरी को रोकने के लिए इसने प्रांतों के गवर्नर की शक्ति को समाप्त कर दिया।
- ❖ इसने दक्षिण भारत अभियान के बाद धन लूटने के लिए किया। यह जिम्मेदारी उसने मिलिक काफूर को दी।

### कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी- ( 1316 ई.-1320 ई. )

- ❖ इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- ❖ यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वरत्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- ❖ खुसरो खां ने 1320 ई. में इसकी हत्या कर दी।
- ❖ खिलजी वंश का सेनापति गाजी मिलिक ने खुसरो खां की हत्या कर दी और खुद शासक बन गया।
- ❖ इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हो गया।
- ❖ खिलजी वंश का कार्य-काल सबसे छोटा था।
- ❖ खिलजी वंश के शासक निम्न कबीले से संबंध रखते थे।

### तुगलक वंश ( 1320.1414 ई. )

#### ग्यासुद्दीन तुगलक

- ❖ गाजी मिलिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- ❖ यह किसानों की सहायता के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया, हालांकि नहरों का जाल फिरोजशाह तुगलक ने बिछा दिया।
- ❖ ग्यासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौनाखान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।
- ❖ जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- ❖ इस विजय के बाद जौना खान को मोहम्मद बिन तुगलक कहा गया।
- ❖ ग्यासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- ❖ इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखें।
- ❖ इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि “हुजुर दिल्ली अभी दूर है।”
- ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक ने U.P. के अफगानपुर में ग्यासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किन्तु इस महल के गिरने से ग्यासुद्दीन तुगलक की मर्त्यु हो गई।

#### मोहम्मद-बिन-तुगलक

- ❖ इसका मूल नाम जौना खां था।
- ❖ यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।

- ❖ यह इतिहास में सबसे पढ़ा—लिखा शासक था।
- ❖ इसके समय सल्तनत काल का विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।

#### मोहम्मद-बिन-तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ की-

- (1) इसने दोआब पर तब tax बढ़ा दिया जब वहां अकाल पड़ा था। किसानों के विद्रोह के कारण इसने अमिर कोहि नामक विभाग बनाया जो किसानों की मदद के लिए था।
  - (2) इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा चलवायी, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग होने लगा।
  - (3) इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी देव गिरि (दौलताबाद) में स्थानांतरित की जो असफल रहा।
  - (4) इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लांख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रीम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लीया।
  - (5) इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए उन्हें हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचील अभियान के लिए भेजा जहां अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।
- ❖ 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
  - ❖ 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
  - ❖ 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री “इन्बतुता” 7000 km की यात्रा के बाद दिल्ली पहुंचा।
  - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक इसकी विद्वता से खुश हुआ और उसे दिल्ली का काजी (जज) नियुक्त किया।
  - ❖ इन्बतुता के कहने पर ही M.B.T. ने डाक—विभाग प्रारंभ किया।
  - ❖ इन्बतुता के नेत त्व में M.B.T. ने एक दूत मंडल चीन भेजा।
  - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
  - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक का कहना था कि मेरा राज्य रुग्न (बीमार) हो चुका है।
  - ❖ M.B.T. की मत्य पर इतिहासकारों का कहना है कि जनता को अपने राजा से एवं राजा को अपनी जनता से छुटकारा मिल गया।

#### फिरोज-शाह-तुगलक

- ❖ यह जौना खाँ का चरेरा भाई था। इसकी माता सोनार थी। अतः इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजीया कर लगा दिया।
- ❖ इसने अशोक के हरियाणा के टोपरा अभिलेख को तथा U.P.

- के मेरठ अभिलेख को दिल्ली में स्थापित कर दिया।
- ❖ इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया।
- ❖ जैसे— जौनपुर, फिरोजाबाद, फैजाबाद।
- ❖ इसने 1200 से अधिक फलों के बाग—बगीचे लगवाएं ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- ❖ इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- ❖ जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे “हक—ए—शर्ब” नामक कर देना होता था, जो कुछ ऊपर का 10% या 110 भाग देना होता था।
- ❖ F.S.T. के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- ❖ इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग “दिवान—ए—बंदगान” बनाया।
- ❖ इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- ❖ गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दिवान—ए—खेतात बनवाया।
- ❖ इसने दर—ऊल—शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- ❖ इसने सरकारी खर्च पर हज यात्रा करवायी।
- ❖ विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- ❖ F.S.T. को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।

#### नसीर-ऊ-दीन महमूद

- ❖ नसीरुद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- ❖ इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- ❖ इसके पंजाब का सूबेदार खिज्ज खाँ ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- ❖ 1398 ई. में मिशोल सेनापति तैमूर लंग ने इस पर आक्रमण किया।
- ❖ तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- ❖ तैमूर लंग ने खिज्ज खाँ को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- ❖ तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद था।
- ❖ 1414 ई. में खिज्ज खाँ ने इसकी हत्या कर दी।

#### सैय्यद वंश ( 1414-1451 )

- ❖ सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्ज खान थे।
- ❖ खिज्ज खान को तैमूर लंग ने दिल्ली का सूबेदार बनाया था।
- ❖ खिज्ज खाँ ने कभी—भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की।
- ❖ इस वंश का शासक मुबारक शाह ने सुल्तान की उपाधि धारण की।

- ❖ इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- ❖ 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ सैयद वंश के काल को मकबरा निर्माण का काल कहते हैं।
- ❖ पहली बार मकबरा का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया, किन्तु शुद्ध इस्लामिक पद्धति पर मकबरा का निर्माण बलबन ने बनवाया था।

### लोदी वंश ( 1451-1526 )

- ❖ यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।
- ❖ इस वंश के संस्थापक बहलोल लोदी थे।
- ❖ यह अपने दरबारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- ❖ इसने जौनपुर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया।
- ❖ इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- ❖ बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।
- ❖ अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- ❖ इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की।
- ❖ इसने गुलरखी नामक पत्रिका लिखी।
- ❖ इसने जमीन की पैमाईश के लिए गज—ए—सिकन्दरी नामक एक मापक बनाया।
- ❖ इसने खाद्यान्न (खाद्य पदार्थ) से कर हटा लिया।
- ❖ इसने ताजिया निकालने तथा महिलाओं के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- ❖ इसे 1518 ई. में खतोली के युद्ध में राणा सांगा ने पराजित कर दिया।
- ❖ इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान लोदी एवं दौलत खान लोदी ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।
- ❖ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

### दिल्ली सल्तनत की सांख्यिक व्यवस्था-

- ❖ दिल्ली सल्तनत पर इस्लामिक कानून लागू थे। किन्तु अधिकांश जनसंख्या मुसलमान नहीं थी। इसी कारण इतिहासकार बरनी ने सल्तनत काल को वास्तविक इस्लाम नहीं कहा हैं सल्तनत काल के अधिकतर अधिकारी अमीर तथा सुल्तान तुर्क कबीले के थे।

- ❖ **वित्तीय व्यवस्था**— इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार क ऐ एवं व्यापार था। इस समय 5 सबसे प्रमुख कर थे—
  - (i) उश्र
  - (ii) मुत्तई
  - (iii) खराज
  - (iv) चरी
  - (v) घरी।
 नोट— खुम्स को मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह लूट का धन था।
- ❖ जजिया, जकात को भी मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह धार्मिक कर था।
- ❖ Tax कर वसूलने वाला सबसे छोटा ग्रामिक अधिकारी चौधरी होता था, जबकि सबसे बड़ा अधिकारी इक्तादार होता था।
- ❖ जब इक्तादार निश्चित tax से भी अधिक tax वसूल कर देता था, तो इस अतिरिक्त आय को फवाजिल कहा जाता था।
- ❖ Tax वसूलने में हो रहे भ्रष्टाचार के निगरानी के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने दिवान-ए-मुस्त खराज नामक विभाग बनवाया।
- ❖ सल्तनत काल में टाका तथा जितल ही प्रमुख सिक्के थे जिसे इल्तुतमिश ने चलाया।
- ❖ गुलाम वंश के शासक अलाउद्दीन महमूद शाह ने अपने सिक्के पर खलिफा का चित्र बनवाया।

### सल्तनत कालीन धार्मिक व्यवस्था-

- ❖ **जाबिद**— राज्य के कानून को जाबिद कहते थे।
- ❖ **सरियत या हदिस**— धार्मिक कानून को सरियत या हदिस कहा जाता था।
- ❖ **दिवान-ए-रिसालत**— ये धार्मिक मामलों की जाँच करते थे।
- ❖ **दस्तार वन्दान**— ये उलेमाओं का समूह था, जो सर पर साफा (पगड़ी) बाँधते थे। उच्च धार्मिक गुरुओं को उलेमा कहते हैं।

### सल्तनत कालीन स्थापत्य या वास्तुकला-

- ❖ भवन निर्माण की कला को स्थापत्य कला कहते हैं।
- ❖ घोड़े के नाल के आकार की मेहराब की आकृति (निर्माण) सर्वप्रथम अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई दरबार में की।
- ❖ अष्टभुजी मकबरा का निर्माण तुगलक काल में हुआ। गयासुहीन तुगलक ने तुगलकाबाद शहर बसाया।
- ❖ बड़े आकार के मेहराब (दिवाल) का निर्माण खिलजी वंश में हुआ।
- ❖ बलबन पहला ऐसा सुल्तान था, जिसका मकबरा शुद्ध इस्लामिक पद्धति में बना।

### सल्तनत कालीन साहित्य-

- ❖ सल्तनत काल में फारसी भाषा का प्रचलन था।
- ❖ सल्तनत काल के सबसे बड़े कवि अमीर खुसरो थे, जिन्हें मंगोलों ने बंदी बना लिया था, किन्तु वो वहाँ से भाग गए।
- ❖ ये बलबन से लेकर मोहम्मद-बिन-तुगलक तक कुल 7 राजाओं के दरबार में रहे थे।
- ❖ इन्हें अपने दरबार में सरंक्षण अलाउद्दीन-खिलजी ने दिया।
- ❖ ये हिन्दी, फारसी तथा खरी बोली के जानकार थे।

- ❖ इन्होंने सर्वाधिक रचनाएँ खरी बोली में की हैं।
- ❖ इनकी सबसे प्रमुख रचना तारीख-ए-दिल्ली है। इन्हें तोता-ए-हिन्द कहते हैं।
- ❖ ये निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इन्होंने तबला तथा सितार का आविष्कार किया।
- (i) सितार को हिन्दू-मुरिलम का मिश्रण कहते हैं।
- (ii) सल्तनत काल का एकमात्र सुलतान फिरोज-शाह तुगलक था, जिसमें अपनी आत्मकथा लिखी। जिसे फतुहात-ए-फिरोजशाही कहते हैं।

□□□